तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जुलाई-2025

रु.20/-

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 02
July- 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल में आणिवर आस्थान

(पुष्प पालकी सेवा)

16-07-2025

02-06-2025 से 10-06-2025 तक तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत सुमनोहर रूप से संपन्न किया है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२८)

हे अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले अप्रकट थे और मरने के बाद भी अप्रकट हो जानेवाले हैं, केवल बीच में ही प्रकट हैं; फिर ऐसी स्थिति में क्या शोक करना है?

कोंडा चूतमु रारो कोंडोक तिरुमल कोंडा ॥कोंडा॥

कोंडनि अडिगिन वरमुलोसगु मा
कोंडल तिम्मय कोंडा ॥कोंडा॥

पोदलु सोंपगु निंपुल पू पोदलू वासन नदुलू
पोदलु गल तामर केलकुल पै मेदलु तुम्मेदलु
कदली मलयानिलु वलपुल पस कदली वनमुलु
मोदलगु एल्लप्पुडु नी संपदलुगल मा कोंडा ॥कोंडा॥

शुकमुलतो चदुवुदुरा शुक ब्रह्मादुलु सुतुलु
तकधिम्मनि आडिंचु मयूरततिनि योगीश्वरुलु
सकल पुराणंबुल विंदुरु मरि पिक शारिकलचे मुनुलु
मोदलुग नेल्लप्पुडु नी संपदलुगल मा कोंडा ॥कोंडा॥

तलचिन शुक शौनकादुलकु तलचिन तलपोसगुनु
तलपु लोपल नेलकोन्न दयतो मम्मेलिन
चेलुवुडु मा वेंकटरायडु सिरुल नेलवु चेकोन्न
कलियुग वैंकुंठंबुन नाममु कलिकि वेलयु मा कोंडा ॥कोंडा॥

तिरुमलगिरि की सुंदरता का मनहारी वर्णन मिलता है।

तिरुमल की अवलोकनीय, अनोखी सुंदरता का वर्णन करके सभी भक्तों को स्वागत किया गया। 'लो ले लो, कहते हुए पूछ पूछकर वरदान देनेवाले उस गिरि के हरि को देखने आओ अवश्य। फल भरी झाडियों से भरी गिरि में, सुगंध की नदियाँ बहती रहती हैं और उनमें बहुत सारे कमल खिलते हैं और उन पर भृंगों के बृंद मंडराते रहते हैं। कदली वनों में (केलों के वृक्ष) मलयानिल मंद-मंद चलता रहता है। शुक शौनक ब्रह्मादि, शुक वृन्दों से पाठ सीखते हैं। योगीश्वर, मोरों को नृत्य सिखाते रहते हैं। सारिकाओं तथा कोयलों से पुराण सुनते हैं - मुनिवर! इन सभी सुंदर तथा कमनीय संपदाओं से तिरुमल संपन्न है। शुक-शौनक मुनि इस गिरि पर भावुक हो, रचनाएँ करने में मग्न दिखायी देते हैं। भक्त सुलभ श्री वल्लभ करुणाकर हैं श्री वेंकटेश। वे साक्षात् कल्पतरू हैं। उनका स्थिर निवास है, यह गिरिवर! इसीलिए यह कलियुग पर बसा हुआ वैकुंठ है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

- 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।
- 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ (EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।
- चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।
- अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।
- अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।
- सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 जुलाई-2025 अंक-02

विषयसूची

चातुर्मास व्रत	श्री अवधेश कुमार शर्मा	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
भारतीय संस्कृति में गुरु परंपरा	श्रीमती के.साई ललिता ऐश्वर्या	14
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	17
आणिवर आस्थान	डॉ.टी.लतामंगेश	19
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	21
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	25
आडि कृत्तिका का महत्त्व	डॉ.वड्डी जगदीश	31
वेदवती	डॉ.के.एम.भवानी	34
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	36
श्री व्यासतीर्थ (1460-1539)	डॉ.मैथिली प्र.राव	37
गरुड़ पंचमी	डॉ.एस.हरि	40
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	42
सन्तरा	डॉ.सुमा जोषि	44
मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, आचार्य भक्ति और देश भक्ति की महत्ता	डॉ.टी.पद्मजाराणी	46
जुलाई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - साधु का आशीर्वाद	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - भीम पर विष का प्रयोग	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 36		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री महाविष्णु के साथ श्री आंडाल माँ (चित्रकार - श्री मणियम सेल्वन्)।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

परमपावन! गुरुस्मरण!!

‘शब्दे परे च निष्णातम् ब्रह्णि उपसंश्रयम्’ परब्रह्म तत्त्व को संपूर्ण रूप से जानने वाले सद्गुरु उस परब्रह्म में ही विलीन हो जाता है। ‘ब्रह्मवित् ब्रह्मैवा भवति’ के अनुसार ब्रह्म को जानने वाले ब्रह्म ही बन जाता है। इसलिए सद्गुरु देव स्वरूप है। ऐसा गुरूजी को गुरु पूर्णिमा के दिन पूजाएँ संपन्न होती है। संपन्न होनी चाहिए। आध्यात्मिक साधकों को और एक कारण से भी गुरु पूर्णिमा एक महत्तर पर्व दिन है। अपने प्रशिक्षण को और एक आगे बढ़ाने के लिए, अपने-अपले गलतियों को गुरूजी को समर्पित करके, फिर से कोशिश करके आगे बढ़ाने का यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

गुरु-शिष्य परंपरा एक ज्ञान गंगा नदी झरी है। हमारे भारत देश में अत्यंत महान प्राचीन पीठों से गुरूजी उस दिनों से लेकर आजकल तक निरंतर ज्ञान विज्ञान को देती आ रहे हैं। इसलिए इस गुरु पूर्णिमा के दिन वेदव्यास, ऋषि-मुनियों से दिन-ब-दिन वृद्धि होकर गुरु परंपरा को हम विनम्रता पूर्वक नमन समर्पित करना है। गुरूजी से विनम्रता, गौरव, आदर के भाव से रहना चाहिए। गुरूजी को भी भगवान के जैसा हम समझे तो गुरु का संपूर्ण अनुग्रह हमको मिल जाता है। ये ही गुरु-शिष्य संबंध का वैशिष्ट्य है। यह गुरु-शिष्य परंपरा जीव नदी के जैसा युग-युगों तक चलते ही रहती है।

संस्कृत में ‘क्षर’ माने ‘नाशवान’ है। ‘अक्षर’ माने ‘नाश रहित’ अर्थ है। इस संसार में जनन-मरण है। इस दुनिया में कई गुरु-शिष्य पैदा हुई है। परमपद गई है। परंतु कुछ लोग मात्र ही उत्तम ग्रंथ को लीख कर इस दुनिया को दिया था। उसी के अंतर्गत महाभारत, रामायण, भागवत, उपनिषत्, पुराण आदि... ये ही हमारी संपत्ती है।

इस दैनंदिन जीवन में कष्ट नष्टों से, दुःखों से हम को विमुक्ति पाने के लिए हमको ज्ञान संपत्ति जरूरी चाहिए। अज्ञान को दूर कर ज्ञान को प्रसादित करने वाले ज्ञानी ‘गुरु’ ही है। इह-पर दोनों पर सुख सादन केलिए गुरु का उपदेश, अनुग्रह दोनों जरूरी होना चाहिए।

गुरूजी का पैदा को ‘चरण’ जैसा अर्थ है। चरण माने हमारे व्यवहार रीति का विधान भी अर्थ आता है। शिष्य ने गुरूजी का चरण को पकडा गई, तो गुरूजी के मार्गनिर्देशन में ही अपना जीवन को जीने से उस जीवन का अर्थ आता है। ऐसा गुरूजी के चरणों को इस गुरु पूर्णिमा के दिन पूजा कर लेंगे। गुरूजी का आशीर्वाद प्राप्त कर अपना जीवन को धन्य बनें।

प्रस्तावना

भारतीय सनातन धर्म में व्रत एवं उपवास का विशेष महत्व है। इन व्रतों में एक अत्यंत विशेष व्रत है - 'चातुर्मास व्रत।' यह व्रत भगवान विष्णु के शयन काल से लेकर जागरण काल तक का होता है और चार मासों (आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्वियुज एवं कार्तिक) में संकल्पित होता है। इसे धर्म, संयम, ब्रह्मचर्य एवं उपासना का विशेष काल माना गया है। इस लेख में चातुर्मास व्रत के बारे में विस्तारपूर्वक विषय जानकारी लेंगे।

चातुर्मास व्रत : अर्थ और शास्त्रीय आधार

चातुर्मास = चतुर्मास (चार महीने), अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक की अवधि, जिसे भगवान श्रीहरि विष्णु की 'योगनिद्रा का काल' माना गया है।

स्कन्दपुराण में वर्णित है -

''चातुर्मासं च यो भक्त्या करोति नियमं व्रतम्।
स याति परमं स्थानं विष्णोः सायुज्यमश्नुते।।''

एक प्रेरणादायक दृष्टांत

राजा जनश्रुति और ऋषि अंगिरस की कथा (प्राचीन दृष्टांत) -

राजा जनश्रुति एक धर्मात्मा राजा था। उसने जीवनभर अन्नदान, यज्ञ और सत्कर्म किए, किंतु उसे गर्व हो गया कि ''मुझ जैसा पुण्यात्मा कोई नहीं।''

एक दिन वह आकाशवाणी सुनता है - ''राजा जनश्रुति का पुण्य तो महान है, परंतु ऋषि रैभ्य तो उससे भी श्रेष्ठ हैं।''

राजा को आश्चर्य हुआ और उसने खोजकर रैभ्य ऋषि से भेंट की। ऋषि ने उसे बताया कि-

''हे राजन! तेरा पुण्य प्रशंसनीय है, पर तू अभी संयम, मौन, ब्रह्मचर्य और चातुर्मास व्रत से रहित है। तप और त्याग के बिना ज्ञान नहीं आता।''

फिर ऋषि ने उसे चातुर्मास व्रत का विधान बताया। राजा ने अगले ही दिन संकल्प लेकर चार मास तक-

मौनव्रत, एक समय भोजन, भजन-कीर्तन, संत सेवा, प्रत्येक दिन वेद श्रवण आरंभ कर दिया।

कार्तिक शुक्ल एकादशी को व्रत पूर्ण कर जब उसने पुनः रैभ्य ऋषि से भेंट की, तब ऋषि ने प्रसन्न होकर कहा-

''अब तू सच्चा धर्मात्मा है, क्योंकि तूने इंद्रियों को जीता है।'' इस व्रत के प्रभाव से राजा को परम शांति, ज्ञान और भगवत्कृपा प्राप्त हुई।

व्रत की उपयोगित

यह दृष्टांत हमें बताता है कि - केवल बाह्य कर्म से नहीं, संयम, सेवा और साधना से आत्मोन्नति होती है।

चातुर्मास व्रत आत्मनिग्रह और लोककल्याण दोनों का संगम है।

चातुर्मास का अर्थ और काल

चातुर्मास शब्द 'चतुर् मासाः' से बना है, जिसका अर्थ है- 'चार मास'। यह काल आमतौर पर आषाढ़ शुक्ल एकादशी (देवशयनी एकादशी) से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी (प्रबोधिनी एकादशी) तक माना जाता है।

कालानुसार करने वाला व्रत

1) आषाढ़, 2) श्रावण, 3) भाद्रपद, 4) आश्वियुज, 5) कार्तिक।

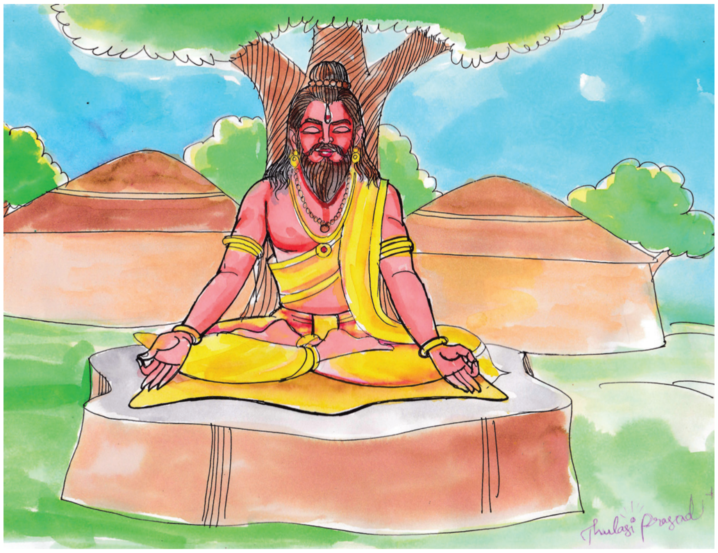

यह काल वर्षा ऋतु के अंतर्गत आता है, जब साधु-संत अपने भ्रमण को त्यागकर एक स्थान पर ठहरकर अध्ययन, प्रवचन एवं साधना करते हैं।

शास्त्रीय सन्दर्भ

(क) स्कन्दपुराण -

''चातुर्मास्यं तु यः कुर्यात् नियमेन समाहितः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः विष्णुलोके महीयते।।''

(स्कन्दपुराण, वैष्णवखण्ड)

इस श्लोक में कहा गया है कि जो भक्त नियमपूर्वक चातुर्मास का पालन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को प्राप्त करता है।

(ख) ब्रह्मवैवर्त पुराण -

''यत्र यत्र स्थिता विप्रा वर्षासु नियता द्विजाः।
तत्र तत्र स्थितं पुण्यं चातुर्मास्यं तदुच्यते।।''

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड)

यह श्लोक दर्शाता है कि जहाँ-जहाँ द्विजजन वर्षा ऋतु में एक स्थान पर रहते हैं, वहाँ-वहाँ चातुर्मास व्रत का पुण्य फल उपस्थित होता है।

चातुर्मास व्रत का उद्देश्य

1) धर्मानुष्ठान में दृढ़ता।

2) इन्द्रिय-निग्रह और मनोनिग्रह।

3) शाकाहार, ब्रह्मचर्य एवं संयम का पालन।

4) गुरु-संत-संन्यासियों की सेवा।

5) सामाजिक और आध्यात्मिक शुद्धता।

व्रत के नियम

(क) आहार - विहार में संयम -

विभिन्न मासों में विशेष त्याग किए जाते हैं, जैसे -

आषाढ़ में - पालक, कटहल और अधिक तैलीय वस्तुएँ त्याज्य।

श्रावण में - दूध या दही का त्याग।

भाद्रपद में - मटर, बैंगन आदि का त्याग।

आश्वियुज में - उबटन, तेल-मालिश और सत्तू जैसे पदार्थों का त्याग।

(ख) ब्रह्मचर्य और सात्विक जीवन -

स्त्रियों और पुरुषों को इस समय ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

अधिक से अधिक जप, तप, स्वाध्याय और संत सेवा करनी चाहिए।

परनिंदा, क्रोध, असत्य आदि से बचना चाहिए।

धार्मिक कृत्य और उपासना

हरि शयन एकादशी (आषाढ़) से प्रारंभ।

श्रवण मास - शिव पूजन का विशेष महत्व। कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि इसी काल में आते हैं।

प्रबोधिनी एकादशी (कार्तिक) - भगवान विष्णु के जागने की तिथि।

तुलसी विवाह - इसी समय किया जाता है।

साधु-संन्यासियों के लिए विशेष निर्देश

मनुस्मृति तथा धर्मसूत्रों में चातुर्मास काल में संन्यासियों को एक स्थान पर रहने का निर्देश है।

''नातिविचरते भिक्षुः वर्षासु चतसृष्वपि।''

(मनुस्मृति 6.25)

आधुनिक सन्दर्भ में प्रासंगिकता

आज के युग में चातुर्मास व्रत के नियमों का पालन करने से - मानसिक शुद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य, सामाजिक अनुशासन और आध्यात्मिक उन्नति संभव है।

निष्कर्ष

चातुर्मास व्रत केवल धार्मिक कृत्य नहीं अपितु यह जीवनशैली में संयम, शुद्धता और साधना का सुंदर संगम है। वैदिक संस्कृति में इसकी विशिष्ट भूमिका रही है। भगवान विष्णु के योगनिद्रा काल में हम स्वयं को तप, व्रत और साधना द्वारा उनके कृपापात्र बनने योग्य बनाते हैं।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

पद्मावती का श्रीनिवास से बहस करना :

यह सुन कर पद्मावती ने शीघ्र ही अपनी सखियों को पास बुलाकर गुस्से में उन्हें डांटते हुए श्रीनिवास की तरफ देखकर इस रूप में कहा। ''हे निषादेंद्र! शीघ्र ही तुम दूर चले जाओ!'' यह सुन कर विष्णु ने इस रूप में कहा। ''हे ललितांगी! इस रूप में निष्ठुर क्यों हो रही हो! तुम प्रेम के साथ बात करो। उत्साह से कन्यापेक्षा से यहाँ आया हूँ। तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए मैं योग्य हूँ। पराया नहीं हूँ। कन्यादान करनेवाले तुम्हारे जनक राजा को अपार सुख प्राप्त होंगे। जब मैं ने तुम्हें चाहा। तभी मुझे तुझे दान देना चाहिए। मुझ से दूर रहने का संशय छोड कर मेरे साथ विवाह कर लो।'' इसे सुन कर पद्मावती ने कहा। ''तुम निषाद हो। मैं चंद्र वंशज की तनया हूँ। हे मूढात्मा! इस कारण से तुम को दूर जाने के लिए जानबूझ कर कहने पर भी तुम दूर नहीं जा रहे हो। झगडा न करके बुरी बातें न करके चले जाओ। अगर मेरे पिताजी तुम्हारी बातें सुनेंगे तो बंदी बना कर तुझे पिटवायेंगे। उस के पहले ही तुम यहाँ से चले जाओ।'' कहने से हरि ने इस रूप में कहा। ''न्याय और धर्म क्या है? मैं ब्रह्मचारी हूँ। तुम कन्या हो। इसलिए तुम्हारे साथ विवाह करना धर्मसम्मत है। यह अधर्म नहीं है। इसलिए तुम मुझ पर दया करके निष्ठुर बातें न करके मेरे साथ विवाह कर लो।'' कहते सुन कर पद्मावती ने भौंहें चढाकर आंखें लाल लाल करके चक्री को देखकर इस रूप में कहा। ''रे! हे निषाद! तुम इस रूप में बातें न करके चले जाओ। अपने रास्ते चले जाओ।'' कहते सुनकर हरि ने कहा। ''अपना बंधु समझकर तुम्हारे साथ प्रेम से बात कर रहा हूँ। दूसरे लोगों से मुझे मत पिटाओ। हे तरुणी! अगर पीटना है तो तुम्हीं मुझे पकड कर पीटो।'' चक्री की इन बातों को सुन कर पद्मावती ने कहा। ''तुम इस रूप में मुझ पर पलाश के फूल फेंककर बार-बार मुझे गुस्सा करने के लिए विवश कर रहे हो। तुम को बच कर रहना पसंद नहीं है क्या? छी! जाओ!'' कहने से हँसते हुए हरि ने इस रूप में कहा। ''पैदा होनेवाला मरना सत्य है। इसलिए फिर चिंता क्यों है? तुम से मिलने के बाद जगत में रहना या मरना दोनों अच्छे हैं!

रमणी! इसके लिए मुझे चिंता क्यो है? सुनो। वांछित कार्य पुरा होने के बाद तुम पकड कर पीटो या डांटो, इससे मुझे कोई भय नहीं होगा। हे नीरजाक्षी! अब तुम शीघ्र ही मुझ पर दया करो।'' कहते सुनकर पद्मावती ने इस रूप में कहा। ''मेरे पास इस रूप में बातें करना अगर आकाश राज को मालूम हो जायेगा तो तुम को इस लोक में रहने नहीं देगा। हे कुमती! तुम्हे वह कष्ट क्यों? यहाँ से चले जाओ।'' कहते सुन कर हरि ने कहा। ''पैदा होनेवाले मर जाना जिस रूप में सत्य है, तुम को किसी भी रूप में मैं नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारे पिताजी विमल धर्मात्मा है! मुझे कोई बाधा नहीं देंगे। फिर भी बाधा से मैं नहीं डरता। वे मुझे क्यों बाधा पहुँचायेंगे। तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेंगे।'' ऐसा प्रीति से श्रीनिवास ने पद्मावती से कहा। सुन कर पद्मावती ने कहा। ''कंची के वरदराज, कावेरी के रंग, वेंकटाद्री के वेंकटेश्वर के होते तुम्हे मुझे दान नहीं देंगे मेरे पिताजी। तुम को ऐसी भ्रांति क्यों है? जाओ हे निषाद! अपना बचपना छोड कर जाओ!'' कहते सुनकर चक्री ने इस रूप में कहा। ''बार-बार जाओ कहते मुझे असमंजस में डाल रही हो। मुझ पर गुस्सा कर रहे हो। हे शीतांश मुखी! तुम्हें छोड कर मैं नहीं जाऊंगा।'' कहते पद्मावती ने इस रूप में कहा। ''अहो! अपने माता-पिता दूर रहनेवाली मुझ से इस रूप में बात कर रहे हो। हे निषाद! तुम चले जाओ!'' यह सुन कर हरि ने इस रूप में कहा। ''सुनो री! तुम ने मुझे इस रूप में विवेक को सुनाया। तुम्हारे कितने भी बताने पर मेरे भाग्य में जो लिखा हुआ है, उससे अलग कुछ नहीं होगा। तुम्हारे साथ परिणय करने के बाद मैं कहीं भी चले जाऊँ मेरे लिए कुशल ही होगा। हे मानिनी! इसलिए तुझे अपने गले में लेने बिना नहीं छोड़ूंगा।''

पद्मावति के द्वारा हरि पर पथराव कराना :

कहते पद्मावती के समीप पहुँचनेवाले श्रीनिवास को देखकर पद्मावती को बडा गुस्सा आया। अपनी आंखें लाल लाल करके, श्रीहरि का धिक्कार करते हुए, सखियों की तरफ मुड कर 'इस निषाद पर पथराव करो' पद्मावती ने आज्ञा दी। तब पद्मावती की सखियाँ शीघ्र ही घोडे पर सवार श्रीनिवास पर बडी मात्रा में पथराव करने लगती है। श्रीनिवास ने पथराव से अपने को बचाने की कोशिश की। पत्थर घोडे पर लगे। घोडा घायल होकर नीचे गिर गया। तब श्रीनिवास घोडे को छोड कर आश्चर्यचकित होकर अति वेग से आनेवाले पत्थरों से अपने को बचाते हुए, सर के बाल खुलने से चारों दिशाओं में बचने के लिए भागने लगे। उत्तराभिमुख होकर वेंकटाद्री पर चढ गए। अपने निवास स्थान वल्मीक में प्रवेश किया। फिर वकुला मालिका द्वारा बनायी गयी अपनी फूलों की शय्या पर ऐसा सो गए। मानो प्रलयकाल में महाजल में वटपत्र पर सोने वाले परम पुरुष श्रीहरि सो गए हो। तब इधर वन के मध्य में रहनेवाली पद्मावती ने अपनी सखियों को देखकर इस रूप में कहा। ''हे सखियाँ! अपनी माँ की बातों को अनसुना करके मैं इस वन में आयी हूँ। यहाँ पर कष्टों का अनुभव किया। आगे इस पुष्प वन में नहीं आऊंगी। अब बस है। शबर की बातों को आप मेरी माँ को मत बताइए। बताने से हमारे लिए

वह लज्ञा की बात होगी।'' कहते पद्मावती पालकी पर चढ कर सखियों के साथ फूल और फलों को लेकर शीघ्र ही अपने महल पहुँच गयी। वहाँ महल में फूल और फलों को अपनी माँ को सौंप कर अपनी जुही की शय्या पर लेट गयी। इस रूप में हरि के व्यवहार के बारे में सुनकर शौनकादि मुनियों ने 'तदूपरांत हरि ने कौन से प्रयत्न किए।' सूत से पूछा। तब सूत ने बताया। ''हे मुनिवर्य! अब आप को कर्णपर्व के रूप में बताऊँगा, उस के बारे में सुनिए। वह परात्पर परमात्मा विष्णु मनुष्य के रूप में कामुक बन कर मोह से विरह ताप में जलते हुए तनावग्रस्त होकर शय्या पर चादर ओढ कर लेट कर चिंता मग्न हो गए।

विरहतप्त श्रीहरि का वकुला माता के द्वारा परामर्श करना :

लंबी सांस लेते और सांस छोडते शय्या पर लेट कर इधर उधर करवट बदलते सोने की कोशिश करनेवाले श्रीनिवास के पास आकर उनकी अवस्था को देखकर दयालु वकुला मालिका ने इस रूप में कहा। ''हे पुत्र! वेंकट! उठो! भोजन करने में देर हो रही है। तुम्हारे लिए अन्न, परमान्न, भक्ष्य आदि बनाकर तुम्हें खिलाने के लिए मैं लायी हूँ। पेट भर खा लो।'' कहने से बोले बिना आँखों से आँसू बहानेवाले स्वामी को देखते हुए व्याकुल होकर वकुला मालिका ने इस रूप में कहा। ''हे मेरे पुत्र! इस रूप में आर्ती बन कर आंखों से आँसू क्यों निकाल रहे हो? इस रूप में रोने का हेतु क्या है? दिन में नहीं सोना चाहिए, ऐसी रीति को जानते हुए भी इस समय क्यों सो रहे हो? विपुल धैर्य, स्थैर्य रखनेवाले तुम इस रूप में दीन क्यों बने हो? उठो। बैठ कर मुझे सब कुछ बताओं। तुम्हारी चिंता का क्या कारण है?'' वकुला मालिका का इस रूप में समझा बुझाने से श्रीहरि कुछ बोले बिना लंबी सांसें छोडने लगे। इस रूप में उत्तर नहीं देनेवाले पुत्र की ओर देखकर डरकर वकुला मालिका ने इस रूप में कहा। ''आखेट खेलने जंगल जाकर वहाँ पर क्रूर मृगों को देखकर क्या डर गए हो? कहीं भूत, पिशाच तो नहीं लगे? या पत्थरों पर चल कर फिसल कर घायल हो गए हो? नालों में गिर कर उठ कर आ गए हो? हे पुत्र! सच सच शीघ्र बताओ। मैं चिकित्सा करूँगी। अगर नीचे गिर कर घायल हो गए तो तेल लगाकर मालिश करूँगी तो ठीक हो जाओगे। पत्थर पर फिसल कर नीचे गिर गए हो तो गरम पानी घांव पर डालना है। अगर कोई भूत लग गया तो भूत वैद्य को बुलाकर मंत्र करवाना है। अगर मृग भीति मन में बैठ गयी है तो पीठ पर थप थप मारना है। इन चार चिकित्साओं में कौन सी चिकित्सा मैं करूँ? तुम अगर सच सच नहीं बताओगे तो मुझे कैसे मालूम पडेगा? हे पुत्र! मेरे मन से चिंता को दूर करने के लिए सच सच बताओ।'' कहते नीचे से ऊपर तक श्रीनिवास के शरीर को सहलाते हुए पसीने से लथपथ शरीर पर पत्थरों से बनी चोटों को पहचान कर महा भीति से वकुला ने कहा।

सप्तगिरि ग्राहकों को सूचना

अगर कोई सप्तगिरि ग्राहक के घर का पता परिवर्तन हुई तो संबंधित समाचार सप्तगिरि कार्यालय को लेख लीखकर या ई-मेइल से सूचना देना अनिवार्य है। निम्न सूचित कार्यालय पता या ई-मेइल से समाचार दीजिए।

कार्यालय पता : प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला (आं.प्र.) **(या)** ई-मेइल आई.डी. chiefeditortpt@gmail.com.

“हे पुत्र! तुम्हारे शरीर से इस रूप में पसीना क्यों निकल रहा है? तुम्हारे कोमल शरीर पर पत्थरों की ये चोटें किस पाप से हुई हैं? धैर्यवान तुम इस रूप में दीन बन कर आंखों से क्यों आँसू बहा रहे हो? जो कुछ हुआ उसे मुझे सच सच बताने के लिए कहती हूँ तो यह मौन कैसे है?” कहते ओढे हुए वस्त्र को हटाकर उठाकर वकुला मालिका ने श्रीनिवास को शय्या पर बिठा दिया। जहाँ जहाँ चोट लगी हैं वहाँ पर दूसरा वस्त्र ओढाकर, शरीर पर चंदन का लेप किया। ठंडे पानी से नेत्रों को साफ करके सहलाते सहलाते श्रीनिवास को जगाकर, श्रेष्ठ जुही के फूलों से बने पंखे से हवा दे कर श्रीनिवास की थकावट को दूर किया।

इस रूप में हरि की थकावट को दूर करने के बाद बडी दया और वात्सल्य के साथ वकुला देवी ने ‘हे पुत्र! परमान्न खाओ’ प्रेम से पूछा। फिर भी श्रीनिवास ने कोई जवाब नहीं दिया। पुत्र की हालत को देखकर वकुला मालिका व्याकुल हो गयी। फिर कहा। “हे पुत्र! वेंकट! अपनी जिद्धी को छोडो। तुम मन में यह कैसा विचित्र हो गया है?” कहते वकुला ने हरि की तरफ देखकर फिर से कहा। “कहीं तुम वन में किसी सौंदर्यवती विलासी सुंदरी को देखकर विभ्रम होकर उस के मोह में गिर गए हो? कहीं तुम्हारे मन में उस का रूप बस गया हो? कहीं उस ललना ने तुम्हारे हृदय पर बाण छोड दिया हो? हे पुत्र! तुम ने जिसे देखा क्या वह किन्नेरा तो नहीं है? कहीं गीर्वाणी भामिनी तो नहीं है? कानन जंगलों में घुमनेवाली चेंचीता तो नहीं है? गंधर्व कामिनी तो नहीं है? वनदेवता है या कहीं अप्सरा ऊर्वशी तो नहीं है? कहीं मेनका तो नहीं है? सर्वलक्षणों से शोभित रंभा तो नहीं है? तिलोत्तमा तो नहीं है? घृताची तो नहीं है? इन दसों कन्याओं में किसे देख कर तुम आये हो? वह मुझे सच सच बताओ।” वकुला के इस रूप में बोलने से भी श्रीहरि सर झुका कर ही चुप रहे। कुछ नहीं बोले। उसके नेत्रों से भाष्प निकलते ही रहे। इस रूप में दु:खी चक्री को देखकर वकुला मालिका ने भीति से फिर इस रूप में कहा। “कहीं मोहिनी भूत तुम्हारे सामने खडा होकर मंत्र डाल कर गयी है क्या? गगन से कोई कामिनी भूत कोई तुम पर सवार हो गयी है क्या? बताओ हे पुत्र! अगर नहीं तो इस रूप में मुझ से कुछ नहीं बोलने का क्या कारण है? मेरी व्याकुलता बिना कुछ बताये कैसे दूर होगी। मैं कौन सी चिकित्सा करके तुझे ठीक कर सकूँ? एक शब्द भी मुझ से कहे बिना विकलात्मा होकर विवेकहीन होने से मेरा मन व्याकुल हो रहा है। आगे मेरा क्या होगा? तुम मौन धारण करके इस रूप में चुप रहोगे तो यहाँ पर आगे हमारा रखवाला कौन है? कम से कम उस वराह स्वामी को तो अपना वृत्तांत बताओ। इतना रहस्य क्या है? आत्मीयता से तुम्हारे मन की चिंता को मुझे बताओ अब। मैं नाना प्रकार से उस पर विचार करके तुम्हारी चिंता को निश्चय ही दूर करूँगी। इस रूप में मेरी ओर देख रहे हो। तुम जीवित रहने से ही मैं जीवित रहूँगी। तुम्हारे बिना मेरे लिए भी देह की जरूरत नहीं है। मैं भी यहीं पर खडी रहूँगी। निष्ठा से कन्या-दीक्षा और गुरु-निष्ठा में रहनेवाली मुझे परम गुरु और परम पुरुष पुण्यात्मा! वराह स्वामी ने तुझे पालने के लिए दिया। तुम जैसे पुत्र रत्न को जन्म दिये बिना मुझे पालने के लिए दिया। तुझ पर विश्वास रखते हुए मैं तुझे पालने लगी थी। आज तुम्हारे शोक को मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। मुझ पर दया करके अपने मन की चिंता को मुझे बता दो। मैं उस की पूर्ति करूँगी। मैं वचन नहीं तोडूंगी।” कहते श्रीनिवास के हाथों में हाथ रखकर दबाते हुए, सिर पर हाथ से सहलाते हुए चक्री की आँखों के आंसू वकुला मालिका ने पोंछ दिया। यह सब करते उनकी आँखें भर आयीं। रोनेवाली माँ को देखकर माधव का मन पिघल गया।

क्रमशः

भारतीय संस्कृति में गुरु परंपरा

- श्रीमती के.साई ललिता ऐश्वर्या

सदाशिव समारंभाम, शंकराचार्य मध्यमाम।
अस्मदाचार्य पर्यंताम, वंदे गुरु परंपराम।।

आदिदेव शंकर भगवान से शुरू करके, बीच में जगद्गुरु शंकराचार्य को लेते हुए मेरे सारे गुरुओं को प्रणाम कर रहा हूँ।

''गुरु'' शब्द का अर्थ है :

गु - अंधकार, रु - दूर करने वाला।

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मैश्री गुरवे नमः।।

भारतीय संस्कृति में गुरु को भगवान के समान माना गया है। इसलिए प्रत्यक्ष भगवान माता-पिता के बाद ''आचार्य देवो भव'' कहकर गुरु को उन्नत स्थान देकर सम्मान दिया है। माता-पिता जन्म देकर शिशु को पृथ्वी पर लाते हैं तो गुरु उन्हें ज्ञान देकर पूर्ण मानव और योग्य बना देते हैं इसलिए ऐसे गुरु के प्रति सदा श्रद्धा और भक्ति दिखाना हर मानव का कर्त्तव्य है।

भौतिक हो या आध्यात्मिक स्थिति, जब कोई सही निर्देशन के बिना विचलित और पथ भ्रष्ट हा०कर राह भटकते हैं, तब सद्गुरु ही उन्हें सही रास्ता दिखा सकता है। गुरु के बिना मानव का उद्धार करनेवाला और कोई नहीं है - ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं है।

मानव का अज्ञान दूर करके उनमें ज्ञान ज्योति प्रज्वलन करने के लिए स्वयं विष्णु भगवान हयग्रीव, आदिदेव शिव भगवान गुरु दक्षिणा मूर्ति बन गए।

ओम गुरुवे सर्व लोकानाम भिषजे भव रोगिणाम।
निधये सर्व विद्यानाम दक्षिणा मूर्तये नमः।।

ज्ञानानंद मयं देवं निर्मल स्फटिकाकृतिम्।
आधारं सर्व विद्यानां हयग्रीव मुपास्महे।।

भारत देश में गुरु परंपरा बहुत प्राचीन समय (युगों) से चला आ रहा है। पुराण पुरुष श्रीराम और श्रीकृष्ण भी अपने-अपने गुरुओं के प्रति भक्ति दिखाकर कलियुग के मानवों के सामने आदर्श बनकर खड़े हो गए। भारतीय संस्कृति में स्वयं भगवान विष्णु का हयग्रीव अवतार, शिव भगवान का दक्षिणामूर्ति रूप, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वेदव्यास, दत्तात्रेय, शंकराचार्य आदि प्रसिद्ध गुरु हैं।

बृहस्पति देवताओं के गुरु और शुक्राचार्य दानवों के गुरु के रूप में विख्यात हैं। शुक्राचार्य अपनी मृत संजीवनी विद्या को देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच को सिखाकर गुरु का सही अर्थ बताया।

कृतयुग से लेकर कलियुग तक दत्तात्रेय गुरु अवतार बनकर लोगों को मार्ग दर्शन कर रहे है। त्रेतायुग में श्रीराम के कुलगुरु वशिष्ठ जी थे। जब श्रीराम आंदोलित हो गए थे, तब वशिष्ठ जी उन्हें ज्ञान बोध करके श्रीराम को शांति दिलाया। वशिष्ठ जी ने जो बताया था, वहीं वशिष्ठ गीता (योग वाशिष्टम) के नाम से प्रसिद्ध हैं। द्वापरयुग में मुनि संदीप कृष्ण और बलराम के गुरु थे। उनके पास विद्यार्जन करने के बाद कृष्ण उन्हें गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु के मृत पुत्र को जिंदा करके उन्हें गुरु दक्षिणा देकर उनका दुःख मिटाया।

गुरु द्रोणाचार्य कौरव और पांडवों के गुरु थे। विभिन्न परीक्षाओं से सही शिष्य (अर्जुन) को पहचानकर उन्हें सर्वश्रेष्ठ बनाने में द्रोणाचार्य सफ़ल हुए।

कुरुक्षेत्र युद्ध के समय नर रूपी अर्जुन के माध्यम से मानव को भगवद्गीता का उपदेश करके भगवान नारायण रूपी कृष्ण ने जगद्गुरु बनकर मानव मात्र का उद्धार किया।

कृष्णम् वंदे जगद्गुरुम।

कलियुग में भगवान शिव का अंश आदिशंकर का रूप लेकर जगद्गुरु बनकर प्राणिकोटि के उद्धार की कोशिश की। यातायात की सुविधाओं के बिना पूरे भारतवर्ष में पैदल चलकर हिंदू धर्म को प्रतिबिंबित करनेवाले चार पीठों (चारों दिशाओं में) की स्थापना किया और अल्प समय में अमूल्य, अनंत साहित्य की सृष्टि करके आदिशंकराचार्य जगद्गुरु बन गए।

आज के समय में हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीरदास गुरु को भगवान से भी बढ़कर समझते हैं। अपनी रचनाओं में उन्होंने गुरु को जितना बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया, उतना अन्य किसी कवि की रचनाओं में नहीं दिखता है। गुरु की महानता के बरे में कबीरदास के कुछ दोहे इस प्रकार हैं -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागो पाय।
बलिहारी गुरु अपने गोविंद दियो बताए।।

कबीर कहता है कि अगर भगवान और गुरु दोनों एक साथ मेरे समने आकर खड़े होते हैं तो मैं पहले गुरु को ही प्रणाम करूँगा क्योंकि भगवान तक पहुँचने का रास्ता मुझे गुरु ने ही दिखाया। गुरु के मार्ग दर्शन के कारण ही मैं भगवान से संबंधित ज्ञान प्राप्त कर सका और भगवान तक पहुँच सका।

गुरु धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरति शिला पर धोइए, निकसै ज्योति अपार।।

इसका अर्थ है गुरु धोबी के समान है, शिष्य कपड़ा। साबुन पत्थर हैं। जिस तरह धोबी साबुन लगाकर कपड़े को पत्थर पर मारते हुए गंदगी को मिटाकर कपड़े को चमकाता है उसी तरह गुरु अज्ञान रूपी मैल को भक्ति रूपी शिला पर धोकर शिष्य में ज्ञान रूपी चमक लाता है।

सब धरती कागद करूँ लेखनी बन राय।
सात समुंदर की मसी करूँ गुरु गुण लिखा न जाय।।

अर्थात सारी धरती को कागज़ करके, सृष्टि के सारे वृक्षों को लेखनी (कलम) बनाकर

सात समुद्रों की पानी को स्याही बनाकर लिखने पर भी गुरु की महानता को नहीं लिख सकते हैं।

"व्यासाय विष्णु रूपाय, व्यास रूपाय विष्णवे।"

अर्थात व्यास ऋषि स्वयं विष्णु भगवान है। चारों वेदों का विभाजन करने के साथ-साथ महाभारत और अष्टादश पुराणों के लेखक श्री वेदव्यास की जयंती (आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा) गुरु पूर्णिमा के नाम से पूरे भारत देश में श्रद्धा और भक्ति से मनाया जाता है।

पौराणिक काल में ही नहीं, भारत देश के इतिहास में भी कई ऐसे सद्गुरु हैं जो मानव कल्याण के लिए सदैव मार्ग दर्शन करते रहे और अवतार पुरुष माने गए। जैसे - राघवेंद्र स्वामी, श्री रामानुज, श्रीरामकृष्ण परम हंस आदि। ये ही नहीं भारत देश को पालन किया कई राजाओं को सही मार्ग दर्शन करके उन्हें धर्म पथ पर चलाया कुछ और गुरु हैं - समर्थ रामदास और चाणक्य आदि।

चलिए, हम भी सद्गुरुओं के दिखाए मार्ग पर चलकर अपना जीवन को उद्धार करके जन्म सफ़ल करेंगे।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुमल।

तिरुमल पैदल मार्ग पर कार्डियक केस के उपचार में सुधार के लिए आवश्यक सूचना -

1) 60 वर्ष की आयु के बाद और मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अस्थमा, मिर्गी(एपिलेप्सी) और गठिया(अर्थराइटिस) जैसी बीमारियों से ग्रस्त होने पर पहाडियों पर चढ़ने से बचें।

2) मोटे लोगों और हृदय संबंधी स्टेंट प्रक्रिया से गुजर चुके लोगों को पहाडियों पर चढ़ने से बचना चाहिए।

3) पहाडियों पर चढने के कारण तनाव और अधिक ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कम मात्रा के कारण हृदय संबंधी गड़बड़ी और अस्थमा बढ़ सकता है।

4) पुरानी बीमारी से पीड़ित तीर्थयात्रियों को अपनी नियमित दवाइयां साथ लानी चाहिए, ताकि खुराक छूटने से अन्य जटिलताएँ उत्पन्न न हों।

5) किसी भी कठिनाई की स्थिति में कृपया चिकित्सा केंद्रों पर चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाने के लिए अलिपिरि पैदल मार्ग के 1500 कदम, गालिगोपुरम् और भाष्याकार सन्निधि पर स्थित है।

6) किसी भी चिकित्सा सहायता के लिए तिरुमल में अश्विनी अस्पताल और अन्य औषधालयों में 24×7 चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाएँ।

7) क्रोनिक किडनी रोग के रोगियों के लिए किसी भी आपातकालीन स्थिति में स्विम्स (SVIMS) अस्पताल, तिरुपति में डायलिसिस सुविधा उपलब्ध है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(57वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री कुरेशाचार्य की आचार्यनिष्ठा

एक दिन यतिराज श्री रामानुजाचार्य के प्रिय शिष्य स्वामी श्री कुरेशाचार्यजी यतिराज को बिना कहे ही श्रीरंगनाथ भगवान की सन्निधि में गये और वहाँ जाकर भगवान को साष्टांग प्रणाम करके दोनों हाथ जोड़कर उनके सन्मुख खड़े हो गये भगवान ने जब उनके इस प्रकार से अकस्मात् ही आने का कारण जानने की इच्छा प्रकट की तब उन्होंने भगवान के प्रति श्लोक कहकर अपना निवेदन सुनाया। इससे प्रसन्न होकर श्रीरंगनाथ भगवान ने जब उनसे मनोवांछित वरदान माँगने के लिये कहा। तब महात्मा श्री कुरेशजी बोले कि- ''हे भगवान! आपने मुझे पहले से ही समस्त मनोभिलषित पदार्थ दे दिये हैं। अब इस समय मुझे अन्य किसी ऐसी वस्तु की कामना नहीं है जो आपसे उसकी याचना करूँ।'' भगवान पुनः बोले कि- ''ऐसा मत सोचो! सम्प्रति वर की याचना करो। मैं अपने परमप्रिय यतिराज श्री रामानुजाचार्य की शपथ खाकर कह रहा हूँ कि जो वरदान किसी को देने में योग्य नहीं है, वह भी तुम्हें आज दिया जायेगा।'' भगवान के इन प्रिय वचनों को सुनकर अत्यन्त हर्ष से दोनों हाथों की अंजलि बनाकर महात्मा कुरेश ने भगवान श्रीरंगनाथ से अपने वांछित वर की याचना करते हुए कहा कि- ''हे नाथ! इस समय आप मुझे परमपद प्रदानकर दीजिये। यही एक मात्र मेरा अभीष्ट है।'' उनकी प्रार्थना को सुनकर श्रीरंगनाथ भगवान ने कहा कि- ''जो तुम्हारे भक्त तथा उन भक्तों के भक्त होंगे इतना ही नहीं भक्तों की इस परम्परा में जो अन्तिम भक्त होंगे उनको भी हमने मोक्ष देने का वचन दे दिया है। अर्थात तुम्हारे सभी सम्बन्धियों को मैं मोक्ष प्रदान करूँगा। इसमें बिलकुल भी संदेह नहीं है।'' यह कहकर भगवान ने कुरेशजी को अपना तीर्थ, श्रीशठकोप प्रसाद माला आदि प्रेमपूर्वक दिलाकर विदा किया। तत्पश्चात ही अपने आचार्य यतिराज की सेवा में तत्पर रहने वाले महात्मा कुरेशजी परमपद मार्ग को पाकर आर्चिरादिमार्ग के आभूषण की भाँति श्रीवैष्णव मण्डली में सुशोभित हुये।

यतिराज ने जब श्रीरंगनाथ भगवान के द्वारा कुरेश को ही नहीं उनके समस्त संबंधियों एवं उनके पश्चात् की सारी परम्परा को ही परमपद प्राप्ति के वरदान की घटना सुनी तो वे अत्यन्त हर्षित हुये और हर्ष से अपने एक काषाय वस्त्र को गेंद की भाँति बनाकर ऊपर उछालते हुये खुशी प्रकट करने लगे। उन्होंने हर्ष से नाचते हुये कहा कि- ''अब तो मुझे भी निश्चय ही परमपद मिलेगा, कारणा कि कुरेश के साथ मेरा भी संबंध है। गुरु एवं शिष्य के संबंध से बढ़कर अन्य कोई

संबंध महत्वपूर्ण नहीं होता है।'' इसके बाद यतिराज श्री रामानुजाचार्य शीघ्रता के साथ ध्यानमग्न कुरेश के पास आये और उनसे प्रेमपूर्वक कहा कि- ''इस समय में जो तुमने किया है वही उचित है।'' गुरुभक्त कुरेश गुरु के वचनों को सुनकर पुनः समाधि में लीन हो गये। तब यतिराज फिर बोले कि- ''हे कुरेश! जो तुमने आज यह हमारे सामने मौन धारण किया है इसका क्या कारण है?'' यतिराज के इस प्रश्न को सुनकर कुरेश ने कहा कि- ''केवल आपके पवित्र चरित्र के ध्यान के कारण ही मैं मौन बैठा हूँ। अन्य कोई और कारण नहीं है।'' यह सुनकर यतिराज ने कुरेश से उसके साम्प्रतिक जीवन की सभी अनुभूतियों के बारे में जब पूछा तो उन्होंने बतलाया कि- ''हे यतिराज! जिन पुरातन युक्त महात्माओं ने परम धाम प्राप्त किया है, वे तथा उनके मार्गानुयायी अन्य मुक्त महात्मा लोग मेरे सामने आ रहे हैं। नित्य सूरिगण भी वैकुण्ठलोक से मेरे सामने आ रहे हैं। उन्हीं लोगों के दर्शनों से मैं मुग्ध हो रहा हूँ। इस कारण आपके समक्ष कुछ भी बोल नहीं रहा हूँ।'' सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''उस मुक्त धाम वैकुण्ठ में न शास्त्र हैं और न ही शास्त्रीय व्यवस्था है, परन्तु इस लीला विभूति में जीवन की समस्त प्रवृत्तियाँ शास्त्रानुसार ही करनी पड़ती हैं। कारण कि यहाँ शास्त्र विद्यामान है और उसके यहाँ पर विद्यमान रहते हुये समस्त कर्म उनके अनुसार ही होने चाहिये।'' यह सुनकर खिन्नबदन कुरेश अपनी पराधीनता को देखकर विस्मित हुये। तब यतिराज ने उनके कान में द्वयमन्त्र का उपदेश दिया, जिससे वहाँ सभी श्रीवैष्णवों को शंका हुई और उन्होंने बताया कि- ''आपने इस बात की पुष्टि अनेकों बार की है कि अन्तिम समय की स्मृति भगवान के परमपद को देती है, अब द्वयमन्त्र के उपदेश का क्या तात्पर्य है?'' उन्होंने उत्तर में बतलाया कि- ''जिस प्रकार राजकुमार की जिह्वा कर्पूर गुटिका के अभाव से सूखने उगती है। उसी प्रकर प्रपन्न वैष्णवों के जिह्वा भी द्वयमन्त्र के अभाव से सूखने लगती है। इसलिये मैंने इनको यह उपदेश दिया है।'' फिर श्री कूरेशाचार्यजी से कहा कि- ''आप हमें यहाँ छोड़कर वैकुण्ठ जाओगे। पृथ्वी पर आपका संयोग नहीं होगा, और वैकुण्ठ निवासी अपने सुकृत के कारण आपके संयोग का पुण्य लाभ लेंगे और कांची और श्रीरंगम् निवासी अपने पापों के कारण आपके वियोग का दुःख सहन करेंगे। मानसिक व्याकुलता के कारण मैं संगत और असंगत बातें रोकते हुये कहता हूँ कि आप सुखपूर्वक वैकुण्ठ गमन करो।'' यह कहकर उन्होंने हाथ जोड़े हुये कुरेश की पीठ का स्पर्श किया। तो वे उनके पाँवों में कटे वृक्ष की भाँति सहसा गिर पड़े। चरणाब्जों में गिरे हुये कुरेश को उन्होंने भुजाओं में उठाया। तदनन्तर अपने वक्ष तथा नेत्रों को श्री यतिराज के चरणों से स्पर्श किया और चरणामृत बनाकर कुरेश ने पान किया। तथा भक्तिपूर्वक ''योनित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्म'' इस श्लोक का उच्चारण करके वे बोले कि- ''अब आपको बहुत विलम्ब हो गया है आप अब अपने मठ में पधारिये।'' अनिष्ठा व वियोगजनित पीड़ा से व्याकुल अश्रुप्लावित नयनों से मन्थर गति से वे अपने मठ की ओर जाने लगे। तब पीछे से आते हुये कुरेश को देखकर उन्होंने उसको वहीं ठहरने के लिये कहा, और वे अपने मठ में चले गये। श्री कुरेश अपने आचार्य को जाते हुए देखते रहे और आचार्य के प्रवेश के पश्चात् श्री कुरेश लौट गये।

उपरोक्त वर्णन और श्री कुरेश के गुण जनता के हितार्थ यतिराज ने लोगों को कह सुनाये।

।। श्री प्रपन्नामृत का 57वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

आणिवर आस्थान

- डॉ.टी.लतामंगेश

भवाब्धितारं कटिवर्ति हस्तं
स्वर्णांबरं रत्नकिरीट कुंडलं।
आलंबि सूत्रोत्तम माल्य भूषितं
नमाम्यहम् वेंकटशैल नायकम्।।

श्री महाविष्णु वैकुंठ से भूलोक पधारे और तिरुमल में निवास करने लगे। इसलिए तिरुमल को कलियुग वैकुण्ठ के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। भगवान श्री बालाजी तिरुमल में जिस सुनहरे निलय में विराजमान हैं।

उसे आनंदनिलय कहते हैं। उन्हें सुसज्जित करने वाले भव्य और अमूल्य रत्न, नवरत्न मालाएँ, षट्काल पूजाएँ, स्वादिष्ट प्रसाद, विविध उत्सव और शोभायात्राएँ आदि सभी न केवल आनंद और आश्चर्य के श्रोत है, बल्कि पूर्णभक्ति की प्रेरणा भी देते हैं। ब्रह्मांड के स्वामी तिरुमल। श्री वेंकटेश्वर स्वामी के लिए आयोजित अनेक उत्सवों में से आणिवारोत्सव अत्यधिक महत्व उत्सव है।

यह हर वर्ष दक्षिणायन पुण्यकाल यानी सौरमान के अनुसार कर्काट संक्रांति के दौरान मनाया जाता है। जो इस वर्ष 16 जुलाई को पड़ती है। सौरमान का अनुसरण करने वाले तमिल कालमान के अनुसार आणिमास (जुलाई 16) किए जाने वाले आस्थान को 'आणिवर आस्थान' कहते है।

आणिवर आस्थान के उपलक्ष्य में विशेष रूप से पूजा की जाती है। प्रातःकाल स्वामी के सुप्रभात एवं तोमाल सेवा के अनंतर भगवान श्री श्रीनिवास के उत्सवमूर्ति श्री मलयप्पस्वामी अपने उभयदेवेरियाँ श्रीदेवी, भूदेवी और भगवान श्रीनिवास के सेनाधिपति श्री विष्वक्सेन जी का मंदिर में तिरुमंजन (विशेष अभिषेक) किया जाता है। तदनंतर पहला सहस्रनामार्चना, नैवेद्य को समर्पित करने के बाद सर्वभूपालवाहन पर विराजमान श्री मलयप्पस्वामी को उभयदेवेरियाँ श्रीदेवी, भूदेवी के साथ (घंटामंडप) तिरुमहामणि मंडप में गरुत्मंत के सामने वेदी पर बिठाया जाता है।

ttd photo

इस उत्सव में जियंगार स्वामी गण, एकांग, अर्चक, आचार्य पुरुष, वेदपंडित, कार्यनिर्वहणाधिकारी, अन्य अधिकारी, मंदिर के सहायक अधिकारीगण भाग लेते है। अनेक प्रकार के विशेष व्यंजनों को प्रसाद के रूप में भोग चढ़ाया जाता है। विशेष अनुष्ठान प्रक्रिया की पूर्ति के बाद अर्चक जियंगार जी को भगवान के निकट रखे गए स्वामी के मोहर को देते है। आरती, तीर्थ, चंदन, शटारि मर्यादाओं के पूर्ति के बाद देवस्थान के अधिकार 'लच्चन्' अर्थात् चाबियों को स्वामियों के चरणों में समर्पित करते है।

भक्तों द्वारा समर्पित भेंटों को कार्यनिर्वहणाधिकारी को देते हैं। वह उन सभी को एक थैली में बांध कर मोहर लगाकर चाँदी के थाल में रखकर भगवान श्रीनिवास के हुण्डी में समर्पित करते हैं।

तदनंतर गमेकार, महंत, ताल्लपाका, तरिगोंडा लोगों के द्वारा आरतियाँ दिये जाते है। उसके बाद उपस्थित भक्त गणों से एक एक रुपये का वसूली कर 'रुपये आरती' किया जाता है। इस आरती के दौरान वसूली की गई रुपयों को कार्यनिर्वहणाधिकारी के समक्ष खजाना को भेज दिया जाता है। अनंतर श्री मलयप्पस्वामी अपने उभयदेवेरियों के साथ पुरवीथियों में शोभायात्रा करते हैं। यह अत्यंत रमणीय उत्सव है। जो वर्ष में एक बार किया जाता है। यह तिरुमलेश की दरबार है। जो भक्तजनों को आह्लादित करता हैं।

अगस्त 2025

02 मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
04-07 तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
08 वरलक्ष्मी व्रत
09 श्री विखनस महामुनि जयंती, राखी, श्री हयग्रीव जयंती
10 गायत्रीजपम्
15 भारत स्वतंत्रता दिवस
16 श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी
25 श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती
27 श्री गणेश चतुर्थी
28 ऋषिपंचमी

मई-2025 महीने का क्विज-34 के समाधान

1) हिरण्यकशिप, 2) नरसिंह जयंती,

3) श्र नरसिंह स्वामी, 4) धरणीदेवी,

5) पद्मावती, 6) कूर्मावतार भगवान,

7) भगवान बालाजी/श्री वेंकटेश्वर स्वामी,

8) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 9) तिरुपति,

10) श्री वराहस्वामी, 11) श्री पद्मावती देवी,

12) हनुमान, 13) विधर्भ देश,

14) कूर्मावतार, 15) ऊर्मिला.

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यड्लनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 15

श्री वेंकटेश्वर को राजवंशीय और अन्य भक्त जनों से प्रस्तुत सेवाएँ

प्राचीनतम अभिलेखाओं में, जिनको तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने संग्रहित किया है, उस में जिल्द I की संख्या 8 और 9 शामिल हैं। ये राजा महेन्द्र वर्मा के राज्यकाल से संबंधित हैं। इनका समय सन् 600 से सन् 630 के बीच का माना जाता है। इन अभिलेखों में बताया गया है कि ये पल्लव राजकुमारी सामवाय द्वारा प्रदत्त एक चाँदी की मूर्ति से संबंधित विषय हैं। यह मूर्ति सन् 614 में आवश्यक सांप्रदायिक परंपराओं के अनुपालन के पश्चात् सामवाय द्वारा मंदिर को अर्पित की गयी है। उसे स्थापित भी किया गया। यह सिर से चरणों तक की पूर्ण मूर्ति है। साथ ही इस मूर्ति के लिए ज्योति जलाने का प्रावधान और नैवेद्य समर्पण की सुविधाएँ भी हैं। इसके साथ यह भी बताया गया है कि उन्होंने दो उत्सव भी मनाये हैं जो तमिल मासों के अनुसार पुरट्टासि और मार्गली उत्सव हैं।

जिल्द I की संख्या 1 से पता चलता है कि सन् 830 में पल्लव राजा विजयदंति विक्रम वर्मा के दरबार के एक अधिकारी उलगप्पेरुमानार ने, जो शोळनाडु के शोलनूर के अधिकारी थे, राजा के शासकीय वर्ष 51 में एक दीपस्तंभ अर्पित किया था। हो सकता है कि यह भगवान श्री वेंकटेश्वर की नयी मूर्ति (तिरुविलनकोइल - पेरुमानडिगल) की प्रतिष्ठा के संदर्भ में हुआ हो।

संख्या 2 में एक और दीप का उल्लेख है। इसे शीयगंगा ने अर्पित किया था। संभव है कि यह व्यक्ति भी विजय-दंति-विक्रम-वर्मा के सामंत ही हो।

संख्या 3 में उल्लिखित है बाण का जन्म। ये विजयादित्य महावलि बाणराय भी विजय-दंति-विक्रम-वर्मा के सामन्त ही थे। संख्या 4 बताता है कि उन्होंने तीन अन्न-प्रसादों के लिए व्यवस्था की जो हर दिन तीन समयों में अर्पित होते हैं यथा डेवलोप. ई.पी. रेप. अण्ड जिल्द I ये तीन हैं तिरुविलनकोइल-पेरुमानडिगल, तिरुमंतिरशालै - पेरुमानडिगल और तिरुवेङ्कटत्तु - पेरुमानडिगल। अर्थात् (1) संख्या (1) में उल्लिखित और नये रूप से प्रतिष्ठित श्री वेंकटेश्वर भगवान

की मूर्ति (2) नयी उत्सवमूर्ति जो विशेष उत्सवों में और पारंपरिक शोभायात्राओं में मंत्रों और वेदमंत्रों से आराधित होती हैं और (3) मूलविराट यानी मूलबेरम् श्री वेंकटेश्वर भगवान की। सामंत राजा (पूर्वोक्त) ने कुछ ''कळंजु'' सोना (सुवर्ण) और कुछ उपजाऊ भूमि का भी दान दिया। कृषि भूमि को सामंत ने कृषिकों से खरीद कर ही दिया। उस भूमि को कृषकों को ही सौंपकर उसमें फसलें उगाकर उन्हें भगवान को अर्पित होनेवाले अन्नप्रसादों (नैवेद्यों) के लिए देने के लिए कहा गया था। यह दान स्थाई है। स्थाई रूप से नैवेद्य अर्पण के लिए प्रावधान के रूप में है। इन निवेदित समर्पणों में एक है - नन्दि - एरि - तिरु - अमुदु। यह समर्पण निवेदित भूमि से प्राप्त आमदनी से संपन्न होता है और यह आमदनी ''नंदि - एरि'' नामक तालाब के पानी से सिंचित भूमि से होने के कारण यह निवेदन के लिए स्थिर हुआ है।

संख्या 5 में सूचित है गंगै - गंगन - रणसिंगन का नाम। संभवतः ये उत्तर गंगा के राजकुमार हैं। यह नैवेद्य समर्पण राजकुमार द्वारा समर्पित सुवर्ण राशि से प्राप्त सूद से संपन्न होता है। यह भी स्थायी निधि है।

संख्या 6 हमारा ध्यान इरुंगोलक्कोन की ओर संकेत करता है। ये इरुंगोल के राजा है। इनका नाम गुणवान अपराजितन है। आपने एक निधि का प्रावधान कराया है। इसके अनुसार कुछ सुवर्ण राशि जमा की गयी है। इसकी सूद से हर दिन दो ब्राह्मणों को भोजन की व्यवस्था होनी है। उनके नाम से यही विदित होता है कि ये एक जागीरदार थे। ये पल्लव महाराज के अधीन थे। राजा का नाम है अपराजिता। ये पल्लव राजा चोल राजा आदित्य-I से सन् 898 में पराजित हुए थे।

संख्या 7 में शक संवत 820 (सन् 898) का एक खण्ड मिलता है। इस जीर्ण खंड से यह विवरण मिलता है कि तिरुविलनकोइल के लिए एक गाँव की आय का उपयोग करना चाहिए। न तो पल्लव राजा का उल्लेख इस में है और न ही चोल राजा का। इस क्षेत्र पर अधिकार के अंतरण का यह समय था। पल्लव वंश से अधिकार चोल वंशीय राजाओं के हाथ में जा रहा था। सुचारु शासन व्यवस्था अभी तक नहीं हो पायी थी। हो सकता है कि एक स्थानीय अधिकारी ने यह घोषणा की हो और आवश्यक अधिकार पत्र वितरित किया हो।

इस प्रकार पाया जाता है कि सन् सातवीं शती से यहाँ पल्लवों का राजा था। इसी समय में स्थानीय राजवंशीय परिवारों द्वारा, कुछ जागीरदारों से, कुछ आदिराजाओं से और मंदिर के भक्तों से श्री वेंकटेश्वर मंदिर के लिए भगवान की कुछ मूर्तियों, उत्सवमूर्तियों, विशेष यज्ञ-यागादियों के लिए, सांप्रदायिक उत्सवों के लिए और दीपाराधना सामग्री के लिए तथा भोजनादि की व्यवस्था के लिए स्थायी प्रावधान स्थापित किये गये हैं। ये प्रावधान, सुवर्ण दान और भू-दानों द्वारा किये गये हैं। सुवर्ण के मूल्य पर सूद और कृषि कार्य से प्राप्त फसलों के द्वारा भगवान के उत्सव, सेवाएँ और अन्य कार्यक्रम संपन्न होते रहे हैं। यह एक प्रकार से भविष्य-निधि व्यवस्था थी। पल्लवों के समय में तो भगवान श्री वेंकटेश्वर की तीन मूर्तियाँ बनवाकर प्रतिष्ठित की गयी थीं।

चोल राजाओं का समय दसवीं शताब्दि से आरंभ होता है। उनके समय में 40 कळंजु सुवर्ण दान का

उल्लेख मिलता है। यह ज्योति समर्पण के लिए व्यवस्थित दान था। यह दान मलैनाडु के कोडुंगोलूरान द्वारा उनके 29वें शासन वर्ष में स्थापित है (परांतक I) (सन् 936) (वही संख्या 12)। एक और ज्योति स्तंभ शासन वर्ष 20 में उसी राजा के काल में अर्पित हुआ था (सन् 927) जो अन्य किसी के द्वारा हुआ था। अभिलेख खंडित होने के कारण असली व्यक्ति का नाम स्पष्ट नहीं है (एपिग्राफ संख्या 13)।

उक्त समर्पणों के बाद प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है ''पट्टम'' की व्यवस्था। ''पट्टम्'' एक सोने का आभरण है। उसका भार 52 कळंजु है। इसमें 6 पद्मराग, 4 हीरे और 28 मोतियाँ जडे हैं। यह भगवान के मस्तक को शोभित करनेवाला आभूषण है। इसे परांतक II सुंदर चोल राजा की पटरानी ने भगवान को सभक्ति समर्पित किया है। सुंदर चोल महाराज राजराज चोल - I के पुत्र (पटरानी का सौतेला पुत्र) हैं। सुंदर चोल की पटरानी ने चोल राजा राजराज चोल I के 16वें राज्यकाल वर्ष में तिरुवेंकटदेवर को यह (श्री वेंकटेश्वर को) प्रदत्त किया है। (वही, संख्या 14)।

संख्या 16 एक खंडित शिलालेख है। इसमें ''नन्द'', ''उलगमा'', ''मुडैयानुक्कु'' और ''इरुपत्तोंबदु'' शब्द हैं। शायद ये शब्द 29 गायों को दान में देने की ओर संकेत करते हों। (कळंजु के स्थान पर इनको प्रदान किया गया हो)। राजराज चोल - I की रानी उलगमादेवी ने तिरुवेङ्कटम् - उडैयान के मंदिर में एक स्थायी ज्योति (कलश) की स्थापना के लिए यह निवेदन प्रदान किया हो।

संख्या 15 और 17 में राजराज - I के एक अधिकारी का उल्लेख पाते हैं। उनका समय सन् 985 - 1016 है। अधिकारी का नाम अरुलाक्कि (राजराज मूवेंदवेलान) था। ये कावेरी नदी के दक्षिणी तटवासी

थे। आपने 40 कळंजु स्वर्ण ज्योति के लिए अर्पित किया था। यह भी राजराज - I के ऐतिहासिक अधिवेष्ठन के संदर्भ में (संख्या 15) किया।

राजेन्द्र चोल - I के शासन काल में (सन् 1011 - 1044) उनके पुत्र और उत्तराधिकारी राजराज - I ने श्री कपिलेश्वर स्वामी के मंदिर के संबंध में सूचना दी है (संख्या 20)। उसके अनुसार रायन राजेन्द्र चोलन, (बनाम ब्रह्ममारायन् - मनैयदरयन) जो कोत्तूर के मुखिया थे, श्री कपिलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। यह मंदिर तिरुमल पहाडी श्रेणी के पदतल में है। तिरुपति के पास स्थित है।

संख्या 19 वाला शिलालेख राजेन्द्र चोल के शासन के प्रथम वर्ष का है। इसमें राजेन्द्र चोल के द्वारा नियुक्त एक अधिकारी (गवर्नर) कोर्रमंगलमुडैयान के जाँच रिपोर्ट का विवरण है। यह जांच तिरुमुंडियम् के सभैयार द्वारा 24 दीप (ज्योतियाँ) प्रज्वलित करने के लिए जो दान दिया गया था और तदार्थ उपयुक्त धनराशि भी प्राप्त की गयी थी परन्तु उसके अनुसार 24 ज्योतियों के स्थान पर 22 ही रखी जा रही थीं। इसी संदर्भ में यह जांच हुई थी। इस कार्य के लिए 23 पोण (सुवर्ण मुद्राएँ) तिरुचानूर के श्री वेंकटेश्वर भगवान के कोष भांडागार में रखे गये। उस अनुदान के अनुसार ज्योतियों के लिए घी भेजना था। इतना ही नहीं भगवान श्री वेंकटेश्वर मंदिर (तिरुमल पर स्थित) में आराधना के लिए आवश्यक सामग्री भी भेजनी थी। इसकी प्राप्ति से मंदिर के अधिकारी वर्ग और सेवक वर्ग को 24 ज्योतियाँ रखनी थी। कर्पूर नीराजन की व्यवस्था भी इसमें थी।

उक्त विवरण से यह पता चलता है कि तिरुमल पर विलसित भगवान श्री वेंकटेश्वर के मंदिर के समस्त कार्यकलापों का निर्वहण तिरुचानूर की सभा या समिति ने किया है। इसने ही सभी दानों को स्वीकार किया, अनुदानों का स्थापन करवाया, दैनिक व्यवहारों के लिए आवश्यक सामग्री और वस्तुसमुदायों का समायोजन करना तथा उचित रीति से उनको तिरुमल भेजना आदि भी संपन्न किया। तदार्थ तिरुचानूर में एक भंडार था तथा उस पर निगरानी की व्यवस्था भी थी। इससे विदित होता है कि ज्योति कलश दान, अन्नदान, प्रसाद की व्यवस्था के लिए अनुदान, भूदान आदि की जो व्यवस्थाएँ पल्लव और चोल राजाओं के समय में की गयी थीं उन सब का अभिलेखन (रिकार्ड करने) का काम तिरुचानूर में ही संपन्न हुआ था। ई. के बाद बारहवीं शताब्दी तक तिरुपति अथवा तिरुचानूर में किसी मंदिर या देवी-देवता के होने की सूचना नहीं मिलती है। लेकिन

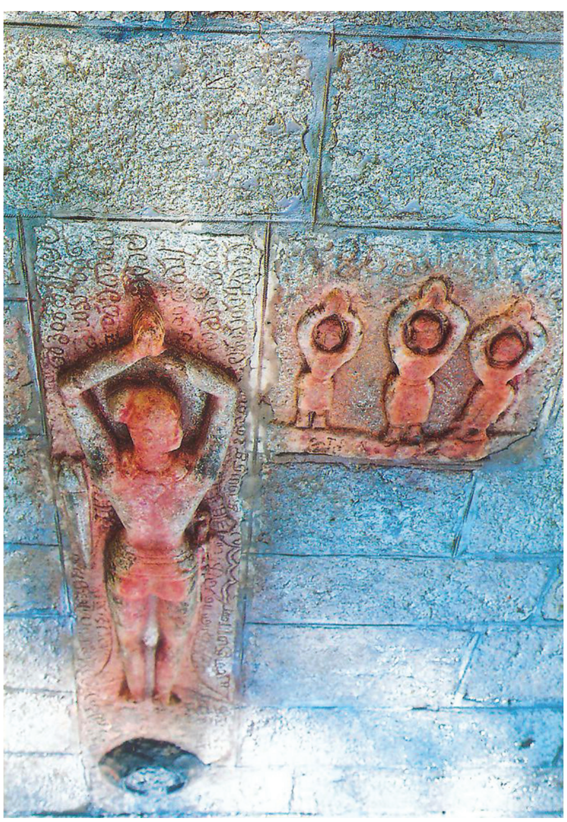

यह स्पष्ट होता है कि तिरुचानूर सभी प्रकार के कार्य कलापों का केन्द्र था। तदार्थ यह सुविधाजनक भी माना गया था। यहाँ मंदिर के शासक और अधिकारीगण आकर कार्य संपन्न करने की व्यवस्थाएँ भी यहाँ से ही करते थे - यथा यात्रा काल में वास स्थान, कचहरी भवन आदि का निर्माण भी इसी जगह पर हुआ। उस समय तिरुचानूर ऐसी व्यवस्थाओं के लिए अनुकूल भी माना गया था। एक शिलालेख में तिरुचानूर ग्राम को देवदान ग्राम भी कहा गया है। यह दान भगवान श्री वेंकटेश्वर को ही संपन्न हुआ है। इसके साथ तिरुमुंडियम् का भी उल्लेख है। संख्या 21 का समय कुलोत्तुंग चोल - I का समय था - (सन् 1070 - 1120)। इस शिलालेख से पता चलता है कि सवा मील की दूरी पर स्थित योगिमल्लवरम् गाँव भी तिरुचानूर का ही एक अंगभूत प्रांत था। योगिमल्लवरम् के मंदिर में प्रतिष्ठित देवता तिप्पलादीश्वर मुडय्य महादेव स्वामी हैं। यहाँ लिंग रूप में शिवजी हैं। उन्हीं को 'मुण्णैप्पूंडि' गाँव को दान में दिया गया था। आजकल उस गाँव का नाम 'मुंड्लपूडि' है। यह एक देवदान है। इस महादेव को आजकल पराशरेश्वर के नाम से पूजा जाता है। इसका कारण भी है। पराशर महर्षि ने इस महादेव की आराधना की थी। पराशर महर्षि की मूर्ति भी इस मंदिर में है।

संख्या 34 शिलालेख एक और है। इसका समय राजराजदेव चोल III के पाँचवाँ शासन वर्ष माना जाता है (सन् 1221 ई)। इससे पता चलता है कि भगवान अलगिय पेरुमाल तिरुचानूर के अधिष्ठान देव हैं। आजकल इस देव का व्यवहार नाम सुन्दरराजस्वामी हैं। पोक्कारन पाण्ड्यदरैयन नामक एक भक्त ने कुछ भूमि को समतल और कृषियोग्य बनाकर उस गाँव के कैक्कोल लोगों को (बुनकरों को) दिया। उन लोगों ने भगवान के उत्सव संपन्न कराने का वादा किया था। ये उत्सव पंगुणि तमिल मास में (मार्च-अप्रैल का समय) मनाये जाते हैं। यह भगवान को प्रदत्त देवदान भूमि बहुत पुरानी है।

संख्या 36 के अनुसार तिरुचानूर के सभैय्यार ही तिप्पलादीश्वर मंदिर से संबंधित सभी व्यवहार संपन्न करते थे और स्थानत्तार मंदिर से संबंधित धार्मिक एवं सांप्रदायिक कार्यक्रम निभाते थे।

क्रमशः

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

कीर्तन

संकीर्तन का तेलुगु शीर्षक

"इंदरिकि अभयंबु निच्चु चेयी..."

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

इतने को दिया अभय यह हस्त
निपुण-समर्थ स्वर्णमय यह दिव्य हस्त
॥इतने को॥

अमूल्य वेदों को खोज निकाला यह दिव्य हस्त
सागर मंथन में मथनी के आधार बना यह दिव्य हस्त
भूदेवी को प्रेम से गले लगानेवाला यह हस्त
बलिष्ठ नखोंवाला नुकीला यह दिव्य हस्त
॥इतने को॥

प्रभुत्व होते ही बलि से दान मांगनेवाला यह दिव्य हस्त
समस्त पृथ्वी को दान देनेवाला यह दिव्य हस्त

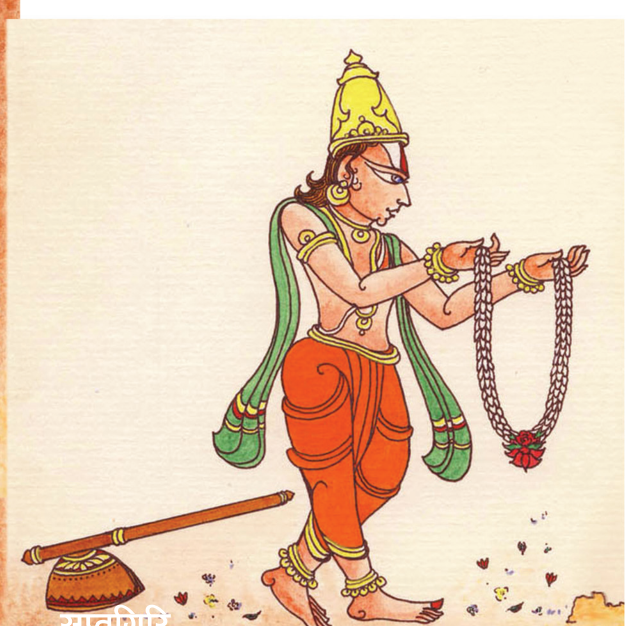

जलनिधि सागर को बाण से वश किया यह दिव्य हस्त
हल को आयुध बनाया यह दिव्य हस्त ॥इतने को॥

त्रिपुरासुर सुंदरियों के मान को तोडा यह दिव्य हस्त
दुष्टों के संहार घोडे दौडानेवाला यह बडा दिव्य हस्त
तिरुवेंकटाचल नाथ बन मोक्ष-मार्ग
सारे प्राणियों को दिखानेवाला यह दिव्य हस्त ॥इतने को॥

भावार्थ

भगवान की अर्चामूर्ति के दर्शन नख-शिख करने की परंपरा है। उसी के अनुक्रम में सर्वप्रथम अन्नमय्या ने श्री

वेंकटेश्वर भगवान के चरणों की महिमा का वर्णन करने के बाद भगवान के वरद दिव्य हस्तों का इस संकीर्तन में अद्भुत वर्णन किया है। इस संकीर्तन में अन्नमय्या ने भगवान श्री महाविष्णु के दशावतारों का उल्लेख करके उन के वरद दिव्य हस्तों का अतिसुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है।

अन्नमय्या का विचार है कि परमात्मा श्री वेंकटेश्वर के दिव्य अभय हस्त उन के प्रति भक्ति रखनेवालों के लिए अभय प्रदान करते हैं। इस संदर्भ में किन-किन भक्तों को उन्होंने अभय दिया है, उल्लेख किया है।

मत्स्य अवतारी बन कर श्रृतियों का अपहरण करके सागर में छिपनेवाले सोमक राक्षस का संहार करके इसी अभय हस्त ने अमूल्य वेदों की रक्षा की थी। अमृत प्राप्ति के लिए सुर और असुरों के द्वारा क्षीरसागर मंथन करते समय मथनी सागर में डूबने लगी थी। तब भी देवताओं के हितौषी बन कर मंथर पर्वत को पानी स्थिर रखने के लिए मथनी के नीचे

इन्हीं दिव्य हस्तों ने उसे उठाकर आधार दिया था। हिरण्याक्ष के द्वारा धरती को चटाई की तरह लपेट कर पाताल में फेंकने पर उस राक्षस का संहार करके भूदेवी को प्रेम से फिर से पाताल से यथास्थान पर रखकर भूदेवी को प्रेम से गले लगानेवाले दिव्य हस्त इसी भगवान के ही हैं।

परम भागवतोत्तम हरि भक्त प्रह्लाद की बात को सही ठहराने के लिए, जिसने अपने पिता कहा था कि श्रीहरि सर्वत्र व्याप्त परमात्मा है, राज महल के खंभे से प्रकटित होकर हिरण्यकश्यप की आंतडियों को निकाल कर उस का संहार करनेवाले नुकीली नखोंवाले बलिष्ठ दिव्य हस्त भी इन्हीं के हैं।

देवताओं के उद्धार के लिए स्वयं सर्वेश्वर होते हुए भी आप समस्त संपदाओं के स्वामी होते हुए भी उससे संतुष्ट न होकर बलि चक्रवर्ति से अपने हाथों से दान मांगने के लिए इन्हीं दिव्य हस्तों ने हाथ फैलाये थे। इक्कीस बार सारी धरती पर आक्रमण करके क्षत्रिय राजाओं से समस्त धरती को जीत कर फिर उस सारी भूमि को कश्यप महा मुनि को दान के रूप में देनेवाले दिव्य हस्त भी ये ही हैं। रावण के संहार करने वानरों के साथ लंका जाते समय रास्ते में रुकावट पैदा करनेवाले सागर राजा को अपने बाणों से वश में करनेवाले दिव्य हस्त भी ये ही हैं।

द्वापरयुग में बलराम बन कर हल को आयुध बनानेवाले दिव्य हस्त भी ये ही है। इन्हीं दिव्य हस्तों ने त्रिपुरासुर की वनिताओं के प्रातिवत्याभिमान को तोड दिया था। कल्की अवतार में इन्हीं दिव्य हस्तों ने ही दुष्टों को दंड देने दिव्य अश्व को चारों दिशाओं में दौडाया था। और तो और सारे प्राणियों को मुक्ति मार्ग या मोक्ष मार्ग दिखानेवाले वरद हस्त भी ये ही हैं। इस रूप में अन्नमय्या ने दशावतारों का उल्लेख करते हुए कलियुग के देव श्री वेंकटेश्वर के दिव्य वरद हस्तों का अद्भुत वर्णन प्रस्तुत किया है।

तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामी का ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

06-07-2025 से 08-07-2025 तक

श्री गरुड़ाष्टोत्तर शतनामावली

गरुड़ स्तोत्रों को पढने के द्वारा विशेष रूप से संतान प्राप्ति मिलता है। विवाह न होने वालों को विवाह संपन्न हो जाता है। मुख्य रूप से आयुर्वृद्धि होता है। इससे शुभयोग भी मिलता है। भगवान पर अचंचल विश्वास बढता है। इसलिए गरुड़ स्तोत्र पढने के द्वारा सभी प्रकार के शुभ मिल जाता है। 'गरुड़ पंचमी' के संदर्भ में 'गरुड़ाष्टोत्तर शतनामावली' 'सप्तगिरि' पाठकों के लिए...

नमः पन्नगनद्धाय वैकुण्ठ वशवर्तिने।
श्रुतिसिन्धु सुधोत्पाद मन्दराय गरुत्मते।।

ॐ श्रीवैनतेयाय नमः
ॐ खगपतयै नमः
ॐ काश्यपायय नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ तत्पकांचनवर्णाभाय नमः
ॐ सुपर्णाय नमः
ॐ हरिवाहनाय नमः
ॐ चंदोमयाय नमः
ॐ महातेजसे नमः
ॐ महोत्साहाय नमः 10

ॐ महोबलाय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ विष्णुभक्ताय नमः
ॐ कुंदेंदुधवलाननाय नमः
ॐ चक्रपाणिधराय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ नागारये नमः
ॐ नागभूषणाय नमः
ॐ विद्वन्मयाय नमः
ॐ विशेषज्ञाय नमः 20

ॐ विद्यानिधये नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ भूतिदाय नमः
ॐ भुवनदात्रे नमः
ॐ भयघ्ने नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ सप्तछंदोमयाय नमः
ॐ पक्षिराजाय नमः
ॐ सुरासुरपूजिताय नमः
ॐ भुजंगभुजे नमः 30

ॐ कच्छपाशिने नमः
ॐ दैत्यहंत्रे नमः
ॐ अरुणानुजाय नमः
ॐ निगमात्मने नमः
ॐ निराधाराय नमः
ॐ निस्त्रैगुण्याय नमः
ॐ निरंजनाय नमः
ॐ निर्विकल्पाय नमः
ॐ परंज्योतिषे नमः
ॐ परात्परतराय नमः 40

ॐ परस्मै नमः
ॐ शुभांगाय नमः
ॐ शुभदाय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ सूक्षरूपिणे नमः
ॐ बृहत्तनवे नमः
ॐ विषाशिने नमः
ॐ विजितात्मने नमः
ॐ विजयाय नमः
ॐ जयवर्धनाय नमः 50

ॐ अजास्यायाय नमः
ॐ जगदीशाय नमः
ॐ जनार्धनमहाध्वजाय नमः
ॐ घनसंतापनच्छेत्रे नमः
ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
ॐ कल्याणदाय नमः

ॐ कालातीताय नमः
ॐ कलाधरसमप्रभाय नमः
ॐ सोमपाय नमः
ॐ सुरसंघेशाय नमः 60

ॐ यज्ञांगाय नमः
ॐ यज्ञभूषणाय नमः
ॐ वज्रांगाय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ वंद्याय नमः
ॐ वायुवेगाय नमः
ॐ वरप्रदाय नमः
ॐ महाजवाय नमः
ॐ विदारिणे नमः
ॐ मन्मथप्रियबंधवाय नमः 70

ॐ यजुर्नाम्ने नमः
ॐ अनुष्टुभजाय नमः
ॐ मारकाय नमः
ॐ कालज्ञाय नमः
ॐ कमलेष्टाय नमः
ॐ कलिदोषनिवारणाय नमः
ॐ स्तोमात्मने नमः
ॐ त्रिवृन्मूर्ध्ने नमः
ॐ भूम्ने नमः
ॐ गायत्रितलोचनाय नमः 80

ॐ सामगानरताय नमः
ॐ स्रग्विणे नमः
ॐ स्वच्छंदगतये नमः
ॐ अग्रण्ये नमः
ॐ विनतानंदनाय नमः
ॐ विजितारातिसंकुलाय नमः
ॐ पतद्वरिष्ठाय नमः
ॐ सर्वेशाय नमः
ॐ पापघ्ने नमः
ॐ पापमोचकाय नमः 90

ॐ अमृतांशवे नमः
ॐ अमृतवपुषे नमः
ॐ आनंदगतये नमः
ॐ सुधाकुंभधराय नमः
ॐ दुर्धराय नमः
ॐ असुरभंजनाय नमः
ॐ अग्रजिते नमः
ॐ जयगोपाय नमः
ॐ जगदाह्लादकारकाय नमः
ॐ भगवते नमः 100

ॐ स्तोत्राय नमः
ॐ शोभाय नमः
ॐ स्वर्णवपुषे नमः
ॐ स्वराजे नमः
ॐ विद्युन्निभाय नमः
ॐ विशालांगाय नमः
ॐ विनतादास्यविमोचकाय नमः
ॐ श्रीगरुडाय नमः 108

।। समस्त सन्मंगलानि सन्तु ।।

वेगोत्तानं वितानं व्यजन ममगुणं वैजयंती जयंती
मित्रं नित्याभ्यमित्रं युधि विजयरथो युग्ययोगानपेक्षः।
दासो निष्पर्युदासो दमतनयभिदो निस्सहायः सहायः
दोधूयेतास्मदीयं दुरित मधरितारातिपक्षैः स्वपक्षैः।।

(आधार - आचार्य के.सर्वोत्तमराव जी का 'पेरियतिरुवडि-शिरियतिरुवडि' ग्रंथ से ग्रहित किया।)

तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामी का पुष्पयाग महोत्सव
02-07-2025

अप्पलायगुंटा, श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी का पुष्पयाग महोत्सव
12-07-2025

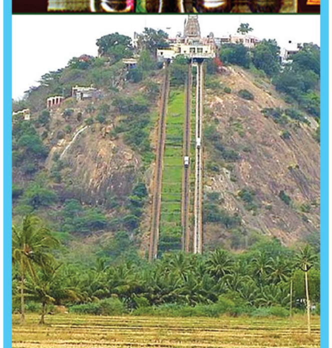

आडि कृत्तिका का महत्त्व

- डॉ.वड्डी जगदीश

परिचय :

आडि कृत्तिका मुख्यतः तमिल भाषा में आडि कृतिगई से जाना जाता है। यह त्यौहार दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में ज्यादातर मनाया जाता है। यह कृतिगई पर्व ग्रीष्म ऋतु में आता है। यह महीना वह समय है जो विभिन्न आध्यात्मिक और धार्मिक रीतियों से भरा होता है क्यों कि इस महीने में सूर्य भगवान दक्षिण दिशा की ओर चलना शुरू करता है। इस महीने में लोग अपनी आद्यात्मिक संस्कृति से जुड़ते हैं और प्रार्थनाओं में भी शामिल होते हैं। यह महीना देवी शक्ति को समर्पित किया जाता है क्योंकि इस महीने में देवी-देवताओं की शक्ति बढ़ती है।

अर्थ : आषाढ़ माह में आनेवाले कृत्तिका नक्षत्र के दिन को आडि कृत्तिका कहा जाता है। इस त्यौहार को आडि कृत्तिका, आडि कीर्तिगई, आडि कृत्तिका जैसे नामों से लोग पुकारते हैं।

आडि कृत्तिका का महत्व :

आडि कृत्तिका समय मध्य जुलाई से लेकर मध्य अगस्त तक होता है।

इसे शुभ महीना भी कहते है क्यों कि इस महीने में देवी-देवताओं की दैवीय शक्तियाँ पृथ्वी पर अपनी कृपा बरसाती हैं और अपकी सच्ची प्रार्थनाओं का उत्तर देती हैं। मुख्यतः इस महीने में सूर्य भगवान उत्तर से दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इसलिए इसे दक्षिणायन भी कहा जाता है। यहाँ दक्षिण का अर्थ है 'दक्षिण' और अयन का अर्थ है 'यात्रा करना' है। इसलिए आषाढ़ का पूरा महीना देवी-देवताओं को अर्पित की जाने वाली विशेष प्रार्थनाओं और पूजाओं के लिए प्रतीक है। आडि कृतिगई को भगवान मुरुगन यानि भगवान श्री सुब्रह्मण्य का शक्ति दिवस माना जाता है। जिस दिन आरुपडै वीडू मंदिरों (भगवान मुरुगन के छह निवास) में उन्हें विशेष पूजा, मेला चढ़ाया जाता है। यह त्यौहार तमिलनाडु के मुरुगन मंदिरों में धूमधाम से मनाया जाता है। शिव-पार्वतियों का द्वितीय पुत्र ही कुमारस्वामी (सुब्रह्मण्य, मुरुगन) है।

आडि कृत्तिका के अनुष्ठान :

मंदिरों में पूजा और यज्ञ के अलावा, आरुपडै वीडू (भगवान मुरुगन के छह निवास) जैसे तिरुत्तनी, तिरुचेंदुर, स्वामीमलाई, पलनी, पलमुदिर्चोलै और तिरुप्परन्कुंड्रम में विशेष और विस्तृत रूप से उत्सव आयोजित किए जाते हैं। इन प्रांतों के अलावा श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर देशों में भी इस दिन विशेष अनुष्ठान और पूजा होती है। इन मंदिरों में भक्त मुरुगन मंत्रों और भजनों कावड़ी अट्टम (एक प्रत्येक नृत्य) आषाढ़ का जाप करते हुए दिन बिताते हैं। कुछ भक्त व्रत के साथ उपवास भी करते हैं।

सुब्रह्मण्यस्वामी की पूजा की विधि :

तमिलनाडु में आडि कृत्तिका एक बड़े त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। जो लोग संतान प्राप्ति की इच्छा रखते हैं उन्हें इस दिन नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए व्रत रखना चाहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर स्वयं को शुद्ध करें तथा सबसे पहले मंदिर को साफ करें और भगवान श्री सुब्रह्मण्य स्वामी की छवि को चंदन से सजाएं। इसी प्रकार भगवान गणेश और भगवान शिव की प्रतिमा भी स्थापित करनी चाहिए। भगवान श्री सुब्रह्मण्य की पूजा लाल फूलों से करनी चाहिए। लाल चंदन चढ़ाना चाहिए। इस तरह पूजा पाठ करना चाहिए।

दीपाराधन :

घर में बने चावल के आटे, गुड और गाय के घी से 5 दीप बनाएं। दीपों में गाय का घी डालें और प्रत्येक दीपों में दो दो बत्तीयां रखें और दीप दान करें। तिल, गुड़ और घी से बनी चिम्मिली, कच्चा दूध, दाल और केला भगवान षण्मुख को अर्पित करना चाहिए। अंत में सुपारी अर्पित करें और श्री सुब्रह्मण्य जन्म वृत्तांत के स्तोत्रों का पाठ करें, शाम तक उपवास करें, शाम को तारों के दर्शन करें और आटे के दीये, चिम्मिली, दाल और केले को दिव्य प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए। आडि कृत्तिका से पहले की रात और उस रात भी ब्रह्मचर्य का पालन करें। ऐसा करने से आपको भगवान श्री सुब्रह्मण्य की विशेष कृपा प्राप्त होगी।

मंदिरों में पूजा करने की विधि :

इस दिन श्री सुब्रह्मण्य के मंदिरों में विशेष अभिषेक और अर्चना की जाती है। जो लोग संतान की इच्छा रखते हैं वे इस दिन भगवान श्री सुब्रह्मण्य की पूजा करते हैं। पुराने ग्रंथों में कहा गया है कि जो लोग पर्दा नहीं उठा सकते, वे उसके नीचे से गुजरने पर भी बच्चे पैदा कर सकते हैं। आज सभी श्री सुब्रह्मण्य स्वामी मंदिरों में आयोजित होने वाले इस काविल्ला उत्सव को देखने के लिए दो आंखों पर्याप्त नहीं हैं।

अन्नदान :

इस दिन में यदि कोई कुंवारा व्यक्ति उपलब्ध न हो तो दोपहर में किसी भूखे को भोजन करा देना अच्छा रहेगा।। यदि ऐसा संभव न हो तो पशु-पक्षियों को आहार या धान्य देना तथा भगवान श्री सुब्रह्मण्य से प्रार्थना करना, शास्त्रों के अनुसार, सर्वोत्तम परिणाम देगा।

आडि कृत्तिका करने से लाभ :

आडि कृत्तिका पर भगवान मुरुगन की पूजा करने से बहुत सारे लाभ मिलते हैं... जैसे :

- बुद्धि, शक्ति, स्वास्थ्य, विजय, संबंध और समृद्धि का आशीर्वाद मिलते हैं।
- जन्म कुंडली में कुज दोष के अशुभ प्रभाव कम होता है।
- हमारे जीवन में नकारात्मक तत्व दूर होता है।
- बाधाएं दूर होकर और सर्वांगीण सफलता प्रदान होती है।
- ऋण और बीमारियों से छुटकारा मिलती है।
- मुख्यतः इस तरह उचित निमयों और अनुष्ठानों के साथ आडि कृत्तिका पूजा करते हैं, तो जो लोग निःसंतान हैं उन्हें संतान की प्राप्ति होती है।
- जिनको विवाह नहीं हो पाता है, उनका विवाह जल्दी होने का संभव होता है।
- यह पूजा अमृत के समान कार्य करती है, विशेषकर उन बच्चों के लिए जो आलसी तथा मानसिक रूप से अस्थिर होते हैं। वे शारीरिक एवं मानसिक से सुदृड बनते हैं।
- जो ज्ञान चाहते हैं उन्हें ज्ञान मिलता है और जो मोक्ष चाहते हैं उन्हें मोक्ष मिलता है।

इस प्रकार आडि कृत्तिका दिवस पर हम भी श्री सुब्रह्मण्य स्वामी की पूजा करें।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

ताल्लपाका श्री चेन्नकेशवस्वामी का ब्रह्मोत्सव

(दि. 06-07-2025 से दि. 14-07-2025 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
06-07-2025	रवि	ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
07-07-2025	सोम	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
08-07-2025	मंगल	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
09-07-2025	बुध	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
10-07-2025	गुरु	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
11-07-2025	शुक्र	हनुमन्तवाहन	गजवाहन
12-07-2025	शनि	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
13-07-2025	रवि	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
14-07-2025	सोम	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

मिथ की महिला चरित

वेदवती

- डॉ.के.एम.भवानी

वेदवती की कहानी आदिकवि वाल्मीकि से लिखा गया रामायण और वेदव्यास से रचित स्कांद पुराण, वैष्णव खंड के अंतर्गत वेंकटाचल माहात्म्यम में भी आती है। रामायण के उत्तर कांड के अनुसार वेदवती की कहानी इस प्रकार है।

एक बार दानवों का राजा लंकाधिपति रावण सारा भूमंडल पर विहरण करते हुए हिमालय पर्वतों के आस-पास के जंगलों में घूमता रहता है तब अचानक उसकी नज़र वहाँ तप करनेवाली एक सुंदर कन्या पर पड़ती है। रावण उसकी सुंदरता पर मोहित होकर उसके बारे में जानने की उत्सुकता दिखाता है। तो वह कन्या उसे उचित अतिथि सत्कार करके इस प्रकार बताती है कि उसका नाम वेदवती है। वह बृहस्पति का पुत्र ब्रह्मर्षि कुशध्वज की पुत्री है। पिता के लालन-पालन में मुनि कन्या की तरह जिंदगी बिता रही है। उसकी सुंदरता से मोहित होकर देव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस आदि उसके पिता के पास आकर वेदवती से विवाह करने की चाह प्रकट करते हैं लेकिन उसके पिता नहीं मानता है क्योंकि वह वेदवती की विवाह श्री महाविष्णु से ही करना चाहता है। वहीं बात वह सबसे कहकर उन्हें वापस भेज देता है लेकिन शंभु नामक एक राक्षस राजा इस बात से क्रोधित होता है और वह कुशध्वज को मार देता है। कुशध्वज की पत्नी भी पति के साथ अग्निप्रवेश करती है। तब से वेदवती अपने पिता की चाह पूरा करने का संकल्प करके महाविष्णु को ही मन में बसाकर तप करती रहती है।

वेदवती रावण से यह भी कहती है - ''मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी होने तक तप करती ही रहूँगी। नारायण ही मेरे पति है। उसके सिवा अन्य किसी को मैं पति नहीं मान सकती हूँ। इस दृढ़ निर्णय को लेकर मैं कठिन नियमों को पालन करती हुई तप कर रही हूँ। हे राक्षस राजा! तुमने जो कुछ भी पूछा, मैं उसका उत्तर दे चुकी हूँ। मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ मालूम है। मैं अपने तपोबल से तीनों लोकों में होनेवाली सब बातों को जान सकती हूँ इसलिए हे रावण! अब तुम यहाँ से चले जाओ।''

वेदवती ऐसा स्पष्ट कहने पर भी मोहवश रावण उससे इस प्रकार कहता है - ''हे कन्या! तुम व्यर्थ सपनों में जी रही हो। ये सारे जप-तप बूढ़े लोगों के लिए हैं। ये सब बुढ़ापे में करने लायक हैं। अब तुम पूर्ण यौवन दशा में हो। समस्त सद्गुणों वाली और अत्यंत सुंदर तुम ऐसा कहना उचित नहीं है। दशग्रीव नाम से विख्यात मैं लंकाधिपति रावण हूँ। मुझसे विवाह करके सारे सुख भोग करो।

हे सुंदरी! तुम्हें विष्णु के बारे में नहीं मालूम है। वह मुझसे किसी में भी महान नहीं है।'' तुरंत वेदवती रावण की बातों का खंडन करती हुई कहती है कि -

''हे राक्षस राजा! ऐसी बातें कहकर अपचार मत करो। तीनों लोकों का अधिपति, सर्वभूतों से स्तुति पानेवाले महाविष्णु को अपमानित करना ठीक नहीं हैं।'' वेदवती ऐसा कहते समय ही रावण उसके केशों को अपनी मुट्ठी में बाँध देता है। इससे वेदवती बहुत क्रोधित होकर अपने हाथ को ही तलवार बनाकर उन केशों को काट देती है। क्रोध से उसका मुँह ज्वलित आग जैसा दिखने लगता है। वह कहने लगती है- ''तुमसे अपमानित होने के बाद भी मेरा जिंदा रहना असंभव है। मैं अभी अग्नि प्रवेश करती हूँ। हे पापात्म! तुमने मुझे अपमानित किया। तुम्हें इसका फ़ल ज़रूर भोगना पड़ेगा। तुम्हें मारने के लिए मैं जरूर फ़िर से जन्म लूँगी। मैं तुम्हें शाप देना चाहती हूँ लेकिन इससे मेरा सारा तपोबल व्यर्थ हो जाएगा। यह मैं नहीं चाहती

है। इसलिए मैं फ़िर से जन्म लेकर तेरी मौत का कारण बन जाऊँगी।'' ऐसा कहकर वह ज्वलित आग में कूद पड़ती है। तब देवगण आकाश से वहाँ पुष्प वर्षा बरसाते हैं।

बाद में वेदवती कमल पुष्प में शिशु के रूप में जनम लेती है। कमल जैसा रोशनी फ़ैलानेवाली वह शिशु फ़िर रावण को दिखती है तो रावण उस शिशु को अपने साथ लंका नगर ले चलता है और उसे अपने मंत्री को दिखाता है। वह मंत्री शिशु को परिशीलन करके इस प्रकार कहता है- ''हे प्रभू! आपको मारने के लिए ही यह शिशु आपके पास पहुँची।''

यह सुनते ही रावण तुरंत उस शिशु को सागर में फेंक देता है। वहीं शिशु भूदेवी के पास जाकर राजा जनक हल जोतते समय फ़िर पृथ्वी पर आती है। कृतयुग में वेदवती नाम से रही वहीं त्रेतायुग में रावण को मारने के लिए जानकी (जनक की पुत्रि) बनकर आई। हल के ओट से जन्म लेने के कारण वह सीता के नाम से भी विख्यात हो गई।

वेदव्यास कृत स्कांद पुराण के अनुसार वेदवती की कहानी इस प्रकार है। कलियुग में जब श्री महाविष्णु श्रीनिवास बनकर वेंकटाचल पर आता हैं, तब वह आकाशराज की पुत्री पद्मावती को देखकर उससे विवाह करना चाहता है। माता समान वकुला को पद्मावती से विवाह की बात करने के लिए आकाश राज के पास भेजने के पहले पद्मावती का पूर्व जन्म वृत्तांत श्रीनिवास वकुला माता को खुद इस प्रकार बताता है -

त्रेतायुग में महाविष्णु श्रीराम का अवतार लेकर आया था, तो माता लक्ष्मी सीता के

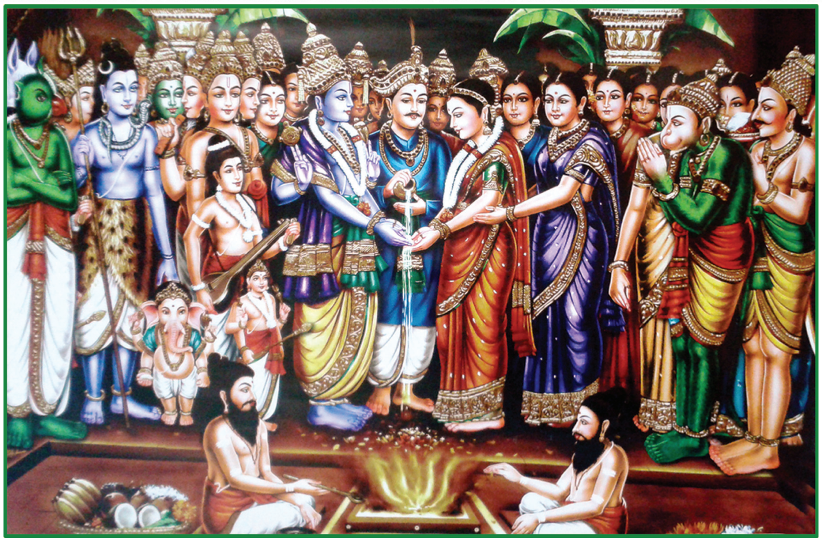

रूप में आई थी। जब दानव राजा रावण माता सीता को अपहरण करने आने को तैयार होता है, तब अग्निदेव यह बात को जानकर सीता को लेकर पाताल लोक में सुरक्षित छिपा देता है और रावण से अपमानित होकर, उसके मृत्यु का कारण बनना चाहने वाली वेदवती को लाकर सीता के रूप में आश्रम में रख देता है। रावण वेदवती को ही सीता समझकर उसका अपहरण करके लंका नगर में रखता है। सीता माता के रूप में वेदवती लंका में कई बाधाओं को सहती है। रावण वध के बाद सीता माता राम से इस प्रकार कहती है -

हे प्रभू! लंका में सीता बनकर कई मुश्किलों का सामना किया वेदवती से आप विवाह करना उचित है लेकिन राम कहता है कि वह रामावतार में एक पत्नी व्रत है। इसलिए वह वेदवती से विवाह नहीं कर सकता है। मगर वह सीता माता को वचन देता है कि आनेवाले कलियुग में वह ज़रूर वेदवती से विवाह करेगा। वह वेदवती ही कलियुग में पद्मावती नाम से जन्म ली थी। इसलिए महाविष्णु श्रीनिवास के रूप में पद्मावती से विवाह करके सीता माता की चाह पूरा करना चाहता है।

द्वापरयुग में श्रीकृष्ण की पोषित माता यशोदा कृष्ण की विवाह नहीं देख पाने का दुःख प्रकट करती है तो कृष्ण कलियुग में उसकी इच्छा पूरा करने का वर देता है। कृष्ण के वर से कलियुग में वहीं यशोदा वकुला माता के नाम से आती है। उन्हीं के हाथों से कलियुग में वेदवती का अवतार पद्मावती और श्रीनिवास की विवाह हो जाती है।

सर्वेजनाः सुखिनो भवन्तु

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

तवन्तरुम् शेल्वुम् तहवुम् तरुम्, शरिया प्पिरवि
प्पवन्तरुम् तीविनै पात्तित्तरुम्, परन्धाम मेन्नुम्
तिवन्तरुम् तीदि लिरामानुजन्तन्नै च्चान्र्दवर्हट्कु
उवन्दरुन्देन्, अवन् शीरन्नि यानोन्नु मुळ्महिळ्न्दे॥९४॥

निखिलहेयप्रत्यनीको भगवान् रामानुजः स्वपदकमलसंश्रितेभ्यस्सद्भयः शरणागतिनिष्ठां प्रयच्छति; भक्तिसंपदं वितरति; स्वकीयपरमकृपामनुगृह्णाति; दुर्निवारसंसारपरम्पराप्रवर्तक दुरितजालान्यपोहति; श्रीवैकुण्ठाख्यं दिव्यं धाम प्रापयति। अतश्चाहं तदीयकल्याणगुणादन्यस्य कस्यापि चानुभवे न भवाम्युत्सुकः।

किसी प्रकार के दोष से विरहित श्रीरामानुज स्वामीजी अपने आश्रितों को शरणागति नामक तपस्या देते हैं; भक्तिसंपद देते हैं; अपनी कृपा भी देते हैं; मिटाने के अशक्य जन्मपरंपरा के हेतुभूत उनके पाप मिटा देते हैं; और परमधाम नामक दिव्यस्थान (श्रीवैकुंठ) भी देते हैं। अतः मैं उनके कल्याणगुणों के सिवा दूसरी किसी वस्तु का सप्रेम अनुभव नहीं करूँगा।

क्रमशः

अर्थिकल्पितकल्पोऽयं प्रत्यर्थगजकेसरी।
व्यासतीर्थगुरुर्भूयादस्मदिष्टार्थ सिद्धये।।

भारत की समृद्ध आचार्य परंपरा के प्रति कर्नाटक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कर्नाटक की अनेक परंपराओं में माधवाचार्य के अनुयायियों की एक विशिष्ट उपस्थिति रही है। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संगीत, सौंदर्यशास्त्र, साहित्य आदि अनेक दृष्टिकोणों से इन आचार्यों का महती योगदान स्पष्ट द्रष्टव्य है। हरिदास परंपरा कहलाए जाने वाले इस परंपरा में श्री व्यासतीर्थ प्रातःस्मरणीय हैं।

श्री व्यासतीर्थ, श्री ब्राह्मण्य तीर्थ के शिष्य को व्यासराज स्वामी के नाम से भी जाना जाता है, जो श्री राजेन्द्र तीर्थ की वंशावली के चतुर्थ आचार्य थे। इनका जन्म सन् 1460 ई. में मैसूरु जिले के बन्नूर ग्राम में हुआ। पिता का नाम था वल्लणा सुमति। बचपन में इन्हें 'यतिराज' कहकर भी पुकारा जाता था। पाँचवे वर्ष में ब्रह्मोपदेश प्राप्त करने के पश्चात चार वर्षों के लिए गुरुकुल गए। वहाँ से लौटने के पश्चात भी उन्होंने अगले पाँच वर्षों तक काव्य, नाटक एवं व्याकरण का अध्ययन जारी रखा।

संन्यास लेने की रोचक कथा :

यतिराज के पिताजी ने प्रण लिया था कि वो अपने द्वितीय संतान को श्री ब्राह्मण्य तीर्थ जी को समर्पित कर देंगे। बच्चे के साथ बहुत अधिक लगाव होने के बावजूद उन्होंने उसे श्री ब्राह्मण्य तीर्थ जी को समर्पित कर दिया जो उस मेधावी बालक को प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुए। परंतु उस बालक को इस महत्वपूर्ण निर्णय के तात्पर्य का आभास नहीं था। अतः वो उस आश्रम से भाग गया। घर की ओर जाते समय बीच में एक विशाल वृक्ष के नीचे विश्राम करते समय उसके स्वप्न में भगवान विष्णु ने आकर सब कुछ समझाया। उठते ही तुरंत व्यासराज गुरुकुल की ओर लौटे।

यतिराज का लालन-पालन श्रीमठ में श्री ब्राह्मण्य तीर्थ द्वारा किया गया। ऐसा लगता है कि उन्हें कुछ समय बाद ही अब्बूरु में कण्व नदी के तट पर श्री ब्राह्मण्य तीर्थ द्वारा 'श्री व्यासतीर्थ' के नाम से बाल ब्रह्मचारी के रूप में चौथे क्रम में दीक्षित किया गया। तत्पश्चात, उन्होंने युवा संन्यासी को उन्नत अध्ययन के लिए कर्नाटक के मुलबागल में श्रीपादराजरु के मठ श्री लक्ष्मी नारायण तीर्थ को भेजा। अगले 12 वर्षों तक श्री व्यासतीर्थ ने श्रीपादराजरु के साथ माधव शास्त्र की आदि विषयों को सीखा।

ऐसा प्रतीत होता है कि चंद्रगिरि के शालुवा नरसिंह के अनुरोध पर संत श्रीपादराज ने श्री व्यासतीर्थ को तिरुपति के भगवान श्रीनिवास की पूजा करने के लिए नियुक्त किया था। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने 1486–1498 तक, अगले बारह वर्षों तक, तिरुपति-तिरुमल में भगवान श्री श्रीनिवास की पूजा करते हुए बिताए और राजा तथा उनके पुत्र-तम्मराय दोनों के लिए कुलगुरु के रूप में सेवा की। इसी समय विजयनगर साम्राज्य के नरसा नायक ने श्री व्यासतीर्थ को विजयनगर आने का

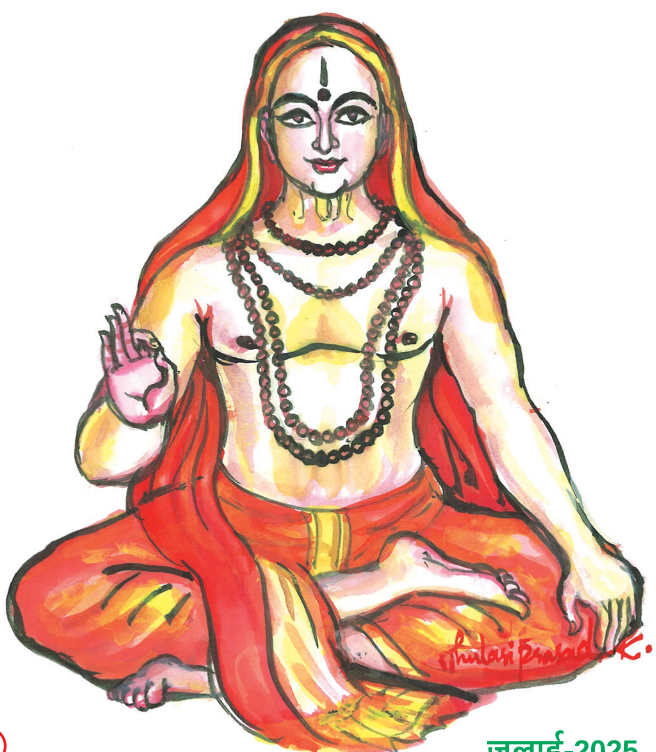

श्री व्यासतीर्थ

(1460-1539)

- डॉ.मैथिली प्र.राव

अनुरोध किया। इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए श्री व्यासतीर्थ ने श्री श्रीपादराज का आशीर्वाद प्राप्त किया और विजयनगर के लिए प्रस्थान किया। राजा ने उनका बहुत भव्य स्वागत किया और उन्हें राज्य का आध्यात्मिक गुरु और राज्य का संरक्षक देवदूत नियुक्त किया। इसके बाद वे अपने उत्तराधिकारियों वीर नरसिंह, कृष्णदेवराय और अच्युतराय के लिए भी जीवन भर कुलगुरु बने रहे। व्यासतीर्थ को अपना पूज्य कुलगुरु मानकर कृष्णदेवराय ने न केवल दक्कन और अन्य राज्यों के सुल्तानों के विरुद्ध सबसे सफल और विनाशकारी सैन्य अभियान का नेतृत्व किया, बल्कि दक्षिण भारत में कला, वास्तुकला, साहित्य और शिक्षा के सबसे गौरवशाली युग की शुरुआत की। राजा के मार्गदर्शक और उपदेशक होने के अलावा व्यासराज ने एक कूटनीतिज्ञ की भूमिका भी निभाई, क्योंकि देश-विदेश से कई अतिथि, गणमान्य व्यक्ति राजा से मिलने आते थे। इतिहासकारों के अनुसार, उनसे पहले, माधवाचार्य की द्वैत शिक्षाएँ मुख्य रूप से उडुपी के आसपास तटीय कर्नाटक क्षेत्र में लोकप्रिय थीं। लेकिन, 16वीं शताब्दी तक, उनकी विचारधारा पूरे दक्षिण भारत में एक प्रमुख बौद्धिक, सामाजिक और राजनीतिक शक्ति बन गई। यह मुख्य रूप से व्यासतीर्थ के पाण्डित्य, वाद-विवाद और विजयनगर के संरक्षण के कारण था। कृष्णदेवराय की मृत्यु (1530) के बाद, अगले शासक अच्युतदेवराय ने व्यासतीर्थ का सम्मान करना जारी रखा। अच्युत के शासनकाल में ही उन्होंने 1532 में हम्पी के विठ्ठलस्वामी मंदिर के प्रांगण में योगवरद नरसिंह की प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा की थी।

व्यासराय को कृष्णदेवराय से अनुदान के रूप में बड़ी मात्रा में भूमि प्राप्त हुई जिसका उपयोग उन्होंने मठों और अग्रहारों के निर्माण के लिए किया जो शिक्षा के महान केंद्र बन गए। उन्होंने बंजर भूमि पर बड़े पैमाने पर सिंचाई परियोजनाओं को संरक्षण दिया ताकि भरपूर फसल पैदा हो सके। कारीगरों और कई अन्य व्यवसायों के लिए आर्थिक अवसर पैदा किए गए जिससे राजनीतिक एकीकरण में भी मदद मिली। इस प्रकार, भूमि अनुदान का उपयोग आम जनता को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुँचाने के लिए किया गया।

विजयनगर साम्राज्य में आने के एक वर्ष के भीतर ही उन्होंने श्री हनुमान के 732 विग्रहों की स्थापना की। सबसे प्रसिद्ध हम्पी में यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर है। मंदिरों में हनुमान का विशिष्ट चित्रण रामभक्त हनुमान के विपरीत वीर हनुमान का है; दूसरे शब्दों में भगवान का उग्र रूप जो भूमि की रक्षा के लिए आवश्यक है। व्यासराय द्वारा प्रतिष्ठित हनुमान रूपांकन की पहचान करने के लिए भक्तगण कुछ विशिष्टताओं का उपयोग करते हैं जैसे कि पूँछ जो सिर के चारों ओर जाती है और अंत में एक घंटी होती है।

व्यासतीर्थ ने हरिदास पंथ के घुमक्कड़ गायकों को भी लोकप्रिय बनाया, जिसे ऐतिहासिक रूप से श्री नरहरि तीर्थ द्वारा प्रचारित माना जाता है। कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के पितामह कहे जाने वाले महान पुरंदर दास को व्यासतीर्थ ने ही प्रशिक्षित किया था। इतना ही नहीं, कनकदास भी, जो गैर-ब्राह्मण कुरुबा जाति के एक संगीतकार-संत थे, उनके शिष्य थे। गुरु ने अपने शिष्यों को रचनात्मक उत्कृष्टता से परिपूर्ण भक्ति के अभूतपूर्व स्तर तक प्रेरित किया और उनकी विशाल विरासत, जो बड़े भौगोलिक क्षेत्रों में फैली हुई है, आज भी उद्घाटित हो रही है।

साहित्यिक अवदान :

श्री व्यासतीर्थ ने विभिन्न शास्त्रीय पहलुओं पर लगभग बारह रचनाएँ लिखी हैं। इनमें से तीन रचनाएँ जिन्हें सामूहिक रूप से 'व्यास त्रय' कहा जाता है; चार रचनाओं का संग्रह है जिसे 'मंदार मंजरी' के नाम से जाना जाता है। 'भेदोज्जिवन' नामक एक स्वतंत्र रचना और कुछ रोचक श्लोक भी हैं।

'व्यास त्रय' के नाम हैं न्यायामृत, तात्पर्य चंद्रिका और तर्क तांडव। 'न्यायामृत' संत की महान कृति है जिसमें उन्होंने प्रतिद्वंद्वी संप्रदायों - मुख्य रूप से अद्वैत के सभी विचारों को एक स्थान पर चर्चा के साथ-साथ अपने स्वयं के संप्रदाय से तुलना के लिए एकत्र किया है। तात्पर्य चंद्रिका श्री जयतीर्थ के तत्वप्रकाशिका पर एक टिप्पणी है जो स्वयं आचार्य के ब्रह्म सूत्र भाष्य की व्याख्या - टीका - है। तर्क तांडव व्यासत्रय का अंतिम भाष्य है और यह संत द्वारा न्याय-वैशेषिक संप्रदाय की द्वैत के संदर्भ में स्वीकार्यता की आलोचनात्मक जांच करने का एक प्रयास है।

बाकी रचनाएँ श्लोक हैं :

श्रीकृष्ण मंगलश्लोक, श्रीनिवास श्लोक, यंत्रोद्धारक श्लोक, शिव स्तुति, प्रमेय नवमालिका श्लोक, ग्रंथमालिका श्लोक, श्रीपादराज और श्री ब्राह्मण तीर्थ पर पंचरत्न श्लोक, शाष्टिक वंश मंगलाष्टक। एक और रचना 'सत्तारकविलास' का श्रेय उन्हें दिया जाता है, लेकिन वह उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि सन् 1515 में जब चैतन्य महाप्रभु उडुपि मठ आए तब व्यासतीर्थ ही उसके अधिपति थे अतः दोनों में बहुत ही रोचक चर्चाएं हुईं। इसलिए चैतन्य संप्रदाय के विद्वान इनकी रचनाओं को 'विष्णु संहिता' के रूप में मानते हैं।

श्रीपाद व्यासतीर्थ शनिवार 8 मार्च 1539 को फाल्गुन माह की चतुर्थी तिथि को अदृश्य हो गए थे। उनका समाधि मंदिर हम्पी में एनगेंडी से आधा किलोमीटर दूर, तुंगभद्रा नदी के किनारे नव वृंदावन द्वीप पर स्थित है।

उपसंहार :

व्यासतीर्थ को वेदांत के माधव संप्रदाय का दूसरा संस्थापक माना जाता है। उन्होंने कई लोगों को प्रभावित किया। उनके कई शिष्यों ने उत्तर भारत की यात्रा की और मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र और यहाँ तक कि राजस्थान और उत्तर प्रदेश में भी उनकी प्रसिद्धि फैलाई। कवि कर्णपुरा ने गौर गणोदेस दीपिका में उल्लेख किया है कि श्रीपाद व्यासतीर्थ ने प्रसिद्ध पुस्तक 'श्री विष्णु संहिता' की रचना की। माधवाचार्य के अनुयायी व्यासतीर्थ को माधव-दर्शन का तीसरा चंद्रमा कहते हैं।

कबीरदास कहते हैं ''वृक्ष कबहुँ न फल भखै, नदी न संचय नीर। परमार्थ के कारने साधुन धरा शरीर।'' संतों की सुदृढ परंपरा की इस भारत-भूमि के संत शिरोमणि हैं श्री व्यासतीर्थ। अनेक गुणों के संगम के धारक, श्री व्यासतीर्थ का व्यक्तित्व अद्भुत एवं असाधारण है, जो सबके लिए प्रेरणादायक है। संन्यासी होने के बावजूद अपने सामाजिक, मानवी, दायित्व के प्रति सजग रहते हुए उन्होंने अनेक आयामों में अद्भुत योगदान दिया है। छे राजाओं के आध्यात्मिक सलाहकार के रूप में उन्होंने जो दायित्व निभाया उसके आधार पर मान्यता प्राप्त अंतिम हिंदू साम्राज्य के संरक्षक देवदूत के रूप में माना जा सकता है। सनातन धर्म के पालन के लिए जिस वातावरण की आवश्यकता थी उसके लिए शासकों द्वारा समर्थन और संरक्षण प्रदान करने के पीछे संत का अदृश्य हाथ था। अपने व्यक्तिगत दार्शनिक उद्देश्यों का पालन करने के अलावा उन्होंने अपने कार्य द्वारा जो सामाजिक तत्परता प्रदर्शित की, वह अनुकरणीय है। भक्ति से ओतप्रोत उनकी रचनाएँ एक तरफ़ यदि सरलता के लिए आम आदमी को आकर्षित करती हैं तो दूसरी ओर उनमें प्रतिपादित दार्शनिक भाव बुद्धिजीवियों को प्रभावित करता है और अनायास ही दोनों में विशुद्ध भक्ति भाव उत्पन्न करते हैं। विद्वान, दार्शनिक, शास्त्रार्थ में पारंगत, शक्तिशाली वाद-विवादकर्ता, संगीतकार, गायक, सलाहकार, शिक्षक, मित्र, हितैषी, समाज सेवक आदि विविध गुणों के धारक श्री व्यासतीर्थ जी भारतीय आचार्य परंपरा के शिरोमणि हैं।

गरुड़ पंचमी

- डॉ.एस.हरि

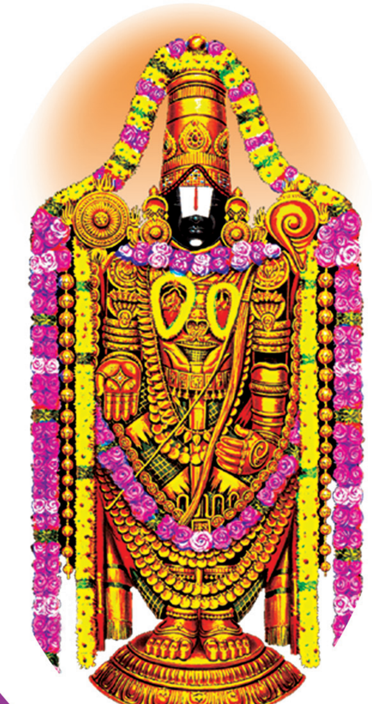

भारत एक महान देश है, जो विविध धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। यहाँ हर दिन कोई न कोई धार्मिक या सांस्कृतिक उत्सव व पर्व मनाया जाता है, जो समाज को न केवल जोड़ता है, बल्कि हमारी परंपराओं और मान्यताओं को श्री सजीव बनाए रखता है। ऐसे ही विविध पर्वों में से एक है ''गरुड़ पंचमी''। जो हर वर्ष नाग पंचमी के ठीक एक दिन बाद श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन मनाया जाता है। यह पर्व मुख्य रूप से भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को समर्पित होता है, जो हिंदू धर्म में पक्षीराज और भक्ति व पराक्रम के प्रतीक माने जाते हैं।

यह पर्व, जो भारतीय धार्मिक विश्वासों में गरुड़ देव की वीरता, भक्ति और माता के प्रति समर्पण को सम्मान देने का दिन है। यह पर्व हमें न केवल पौराणिक कथाओं से जोड़ता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि शक्ति और सेवा का संतुलन ही सच्चे धर्म का मार्ग है। गरुड़ पंचमी भारतीय संस्कृति की गहराई और उसके पवित्र संस्कारों के जीवंत रूप का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पौराणिक संदर्भ :

गरुड़ पंचमी का संबंध मुख्य रूप से गरुड़ पक्षी से है, जो भगवान विष्णु के वाहन और देव पक्षियों के राजा माने जाते हैं। गरुड़ का वर्णन पुराणों में एक तेजस्वी, विशाल और पराक्रमी पक्षीराज के रूप में हुआ है। गरुड़ पुराण, जो हिंदू धर्म के अठारह पुराणों में से एक है, जिसका नाम भी इन्हीं के नाम पर रखा गया है। गरुड़ का जन्म कश्यप ऋषि और विनता से हुआ था और उनके भाई अनूरु भगवान सूर्य के रथ के सारथी बने।

गरुड़ ने अपनी माता विनता को नागों की दासता से मुक्त करने के लिए अनेक तप और पराक्रम किये थे। उन्होंने अमृत प्राप्त करके नागों को मुक्ति का वचन दिया और अपने पराक्रम से देवताओं तक पहुँच बनाई। उनके

अद्भुत पराक्रम और भगवान विष्णु के प्रति समर्पण के कारण उन्हें विष्णु भगवान का वाहन बनने का गौरव प्राप्त हुआ। गरुड़ पंचमी उसी गरुड़ के सम्मान में मनाया जाता है, जो बुराई, विष और अहंकार प्रतीक नागों पर नियंत्रण रखते हैं।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व :

गरुड़ पंचमी का त्यौहार केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पर्व पक्षियों के संरक्षण और जीवमात्र के साथ सह-अस्तित्व की भावना को भी बल देता है। भारत की पारंपरिक मान्यता है कि प्रकृति और जीव-जंतु सभी जीवन-चक्र के अभिन्न अंग हैं और इनका सम्मान करना ही धर्म है।

इतिहास में भी गरुड़ को भारतीय प्रतीक चिह्नों में स्थान मिला है। मौर्य सम्राट अशोक के स्तंभों पर गरुड़ की आकृति उकेरी गई है और कई प्राचीन सिक्कों तथा मंदिरों में गरुड़ की मूर्तियाँ प्रमुख स्थान पर दिखाई देती हैं। इस प्रकार गरुड़ न केवल एक धार्मिक प्रतीक थे, बल्कि शक्ति, भक्ति, मुक्ति और स्वतंत्रता के प्रतिनिधि आज भी बने हुए हैं।

पर्व की मान्यता और पूजा विधि :

गरुड़ पंचमी के दिन श्रद्धलु लोग प्रातःकाल स्नान करके व्रत रखते हैं। गरुड़ की मूर्ति या प्रतिमा की पूजा की जाती है। महिलाएँ विशेष रूप से इस दिन अपने पुत्रों की दीर्घायु और रक्षा की कामना से यह व्रत करती हैं। साथ ही यह भी माना जाता है कि इस दिन गरुड़ की पूजा करने से सर्पदोष, कालसर्प योग और अन्य विष से संबंधित कष्टों से मुक्ति मिलती है।

धार्मिक और सांस्कृतिक संदेश :

गरुड़ पंचमी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और जीव-जंतुओं के सम्मान, मातृभक्ति, शौर्य-पराक्रम तथा निष्ठा का प्रतीक है। यह पर्व हमें यह सिखाता है जीवन में शक्ति का प्रयोग दूसरों की रक्षा और भलाई के लिए करना चाहिए, न कि अहंकार और अन्याय के लिए।

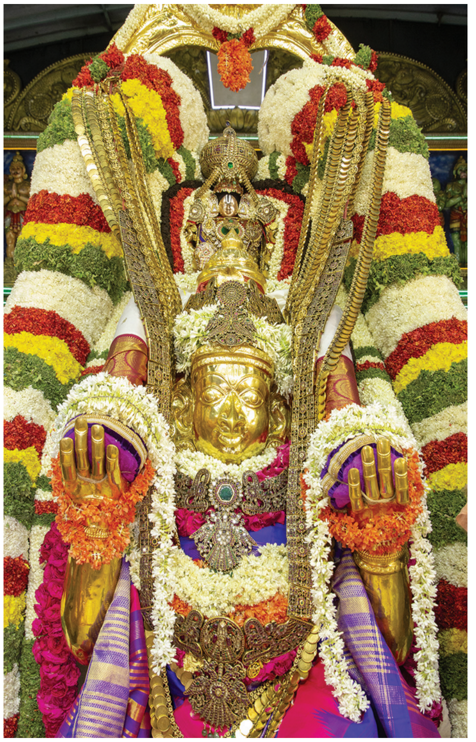

समापन :

इस प्रकार गरुड़ पंचमी एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के मूल जीवन-मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है। ऐसे मूल्य जो हमें न केवल ईश्वर से, अपितु समस्त सृष्टि और जीवमात्र से जोड़ते हैं। गरुड़ जी की उपासना यह दर्शाती है कि धर्म केवल विधियों का पालन नहीं, अपितु कर्म, संवेदना और कर्तव्य निर्वहण का सच्चा मार्ग है। आज के बदलते समय में, जब भौतिकता ने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को ढकने का प्रयास करता जाता है, तो गरुड़ पंचमी जैसे पर्व हमें हमारी जड़ों, परंपराओं व मूल्यों की ओर पुनः लौटने का अवसर प्रदान करते हैं। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता व प्रासंगिकता है, जो हमें जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

78. तिरुकाट्करै - (त्रिक्काकरु)

चेन्नै-कोयंबत्तूर-तिरुच्चूर-कोच्चिन रेल मार्ग में एरणाकुलम स्टेशन है। यहाँ से लगभग 5 कि.मी. है। बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - काट्करैयप्पन - पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पेरुभूचेलव नायकी, वात्सल्यवल्लि।

तीर्थ - कपिल तीर्थ।

विमान - पुष्कल विमान।

प्रत्यक्ष - कपिल मुनि केरल में यह प्रचलित है कि यह वामन भगवान है। ओनम त्यौहार के दिन यहाँ बडा उत्सव होता है।

मंगलाशासन - नम्माल्वार। 11 दिव्य पद केरल को वामन क्षेत्र कहते हैं।

79. तिरु मूळिक्कलम् - (मूळिक्कलम्)

चेन्नै-कोयंबत्तूर-तिरुच्चूर-कोचिन रेल्वे लाइन में आलबाई स्टेशन है। तिरुमूळिक्कलम आलबाई से थोडी

दूर पर भारत पुळा नदी किनारे हैं। एरणाकुलम आदि स्थानों से भी बस की सुविधा हैं।

मूलमूर्ति - तिरुमूळिक्कळत्तान्, अप्पन, सूक्तिनाथ पेरुमाल, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मधुरवेणि नाच्चियार।

तीर्थ - पेरुङ्कुळम्, शंख तीर्थ, चिट्रार्।

विमान - सौन्दर्य विमान।

प्रत्यक्ष - हारीत महर्षि।

विशेष - यहाँ के लोग भगवान को लक्ष्मण कहते हैं। पुराणों में इसका विवरण है कि हारीत महऋषि ने यहाँ कई वर्षों तक तपस्या की एवं वर्णाश्रम एवं नित्यानुष्ठान एवं योग संबन्धी संहिता - श्री सूक्ति (तिरुमोळि) की रचना की।

इसलिए भगवान का नाम 'तिरुमोळिकळत्तान'। आज कल तिरुमूळिकळम नाम से प्रचलित है।

स्थल पुराण में बताया जाता है कि (जब राम चित्रकूट में थे) लक्ष्मण और भरत दोनों ने यहाँ आए थे। भगवान के दर्शन किए। लक्ष्मण ने इस मंदिर के गोपुर, मंडप एवं प्राकार का जीर्णोद्धार किया था।

मंगलाशासन - दो आल्वार, कुल 14 दिव्य पद।

80. तिरुवल्लवाल (तिरुवल्ला)
(श्री वल्लभ क्षेत्र)

तिरुवनन्तपुरम-कोल्लम-एरणाकुलम रेल मार्ग में तिरुवल्ला रेल स्टेशन है। रेल्वे स्टेशन से मंदिर 5 कि.मी. पर है। सभी स्थानों में बस की सुविधा भी है।

मूलमूर्ति - कोलप्पिरान, तिरुवाळमारप्पन, श्रीवल्लभन, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - चेल्वत् तिरुक्कोळुन्दु नाच्चियार, वात्सल्य देवी।

तीर्थ - घण्टाकर्ण तीर्थ, पम्पा नदी।

विमान - चतुरंग कोल विमान।

प्रत्यक्ष घण्टाकर्ण विशेष - इस मंदिर में सुदर्शन चक्र की स्थापना की गई है। ध्वजस्तंभ स्वर्ण लेपित है। महिलाएं सन्निधि के बाहर से दर्शन करती हैं।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 22 दिव्य पद।

क्रमश:

सन्तरा (आयुर्वेद)

संतरे का इतिहास बहुत समृद्ध है और यह विभिन्न पौराणिक कथाओं और संस्कृतियों में शामिल है। एशिया में उत्पन्न होने के कारण, इन्हें सदियों से उगाया जाता रहा है और इन्हें प्रचुरता और आध्यात्मिक शुद्धता दोनों के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। प्राचीन काल से ही संतरे को कला में दर्शाया जाता रहा है, धार्मिक समारोहों में उपयोग किया जाता रहा है और इसके औषधीय गुणों के लिए इसे पूजनीय माना जाता रहा है।

मीठा संतरा, जिसे अवसर सिर्फ ''नारंगी'' के नाम से जाना जाता है, वैज्ञानिक रूप से Citrus Sinensis के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह Rutaceae परिवार के भीतर Citrus जीनस से संबंधित है। ''नारंगी'' शब्द का अर्थ कडवे संतरे Citrus aurantium से भी हो सकता है, जो एक अलग प्रजाति है।

संतरे की खेती उष्णकटिबंधीय जलवायु में की जाती है। इसके लिए दोमट या बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। प्रमुख किस्में नागपुर, किन्नो व कोडू मण्डरीन हैं। रोपाई जून-जुलाई में की जाती है। नियमित सिञ्चाई, संतुलित उर्वरक और कीट नियंत्रण अवश्यक है। फल 3–4 वर्षों में तैयार होते हैं और अक्टूबर से जनवरी के बीच तुडाई की जाती है। संतरा एक सदाबहार वृक्ष है। इसकी ऊञ्चाई लगभग 3 से 6 मीटर तक होती है। इसका तना कठोर तथा छालहल्की भूरी होती है। इसकी पत्तियाँ सरल, चमकदार, गहरे हरे रंग की और सुगंधित होती हैं। संतरे के फूल छोटे, सफेद और सुगन्धित होते हैं। इसका फल गोलाकार, नारंगी रंग का तथा रसदार व खट्टा-मीठा स्वादवाला होता है। उसके बीज बहुविकल्पी (Polyembry-onic) होते हैं और आकार में छोटे व सफेद होते हैं। यह पौधा गर्म व शुष्क जलवायु में अच्छी तरह उगता है।

संतरे में लगभग 85-90% जल होता है। इसमें 8-12% कार्बोहाइड्रेट 0.5-1% प्रोटीन और कम वसा होती है। विटामिन-सी की मात्रा अधिक होती है। साथ ही इसमें पेक्टिन फाइबर, सिट्रिक एसिड, पोटैशियम, कैल्शियम और अन्य खनिज भी पाए जाते हैं। संतरे में फ्लेवोनॉयड्स और एटीऑक्सीडेट्ंस भी होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।

आयुर्वेद में संतरे को नारंग कहा जाता है। इसका रस वात और पित्त दोष को नियंत्रित करता है, परन्तु ठण्डा और मीठा होने के कारण कफ बढ़ा सकता है। संतरे में अम्लीय गुण होते हैं, जो पाचन क्रिया को सुधारते हैं और अग्नि (पाचन शक्ति) को मजबूत करते हैं। यह फल कफ और अम्लता से होनेवाली समस्याओं में लाभकारी है। साथ ही, इसमें विटामिन-सी होने के कारण यह रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है। यदि किसी व्यक्ति जो अम्लता या एसिडिटी की समस्या हो तो संतरे का सेवन सीमित मात्रा में ही करना चाहिए।

- डॉ.सुमा जोषि

सन्तरे के स्वास्थ्य में लाभ

संतरे का गूदा (फल का अंदरूनी हिस्सा)

विटामिन-सी से भरपूर-रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। फाइबर से भरपूर होता है और पाचन को सुधारता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण होता है, फ्री रेडिकल्स से बचाता है। हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी-ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल कम करता है। ब्लड शुगर नियंत्रित करता है - डायबिटीज में सहायक। यह कोलेजन निर्माण में मदद करता है, त्वचा को निखारता है। कम कैलोरीवाला है और पेट को भरनेवाला है इसीलिए वजन घटाने में सहायक है। विटामिन-ए और कैरोटेनॉइड्स होते हैं और आंखों की सेहत बढ़ाता है। फोलेट और पोषक तत्वों से भरपूर होता है, मस्तिष्क को पोषण देता है। सिट्रिक एसिड मौजूद होता है - किडनी स्टोन से बचाता है।

संतरे का रस (ताजा)

जल और इलेक्ट्रोलाइट्स का अच्छा स्रोत है। शरीर को हाइड्रेट करता है। आयरन अवशोषण बढ़ाता है - खून की कमी में फायदेमन्द है। हेस्पेरिडिन जैसे फ्लेवोनॉयड्स सूजन घटाने में सहायक है। यह रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को कम करता है। लम्बे समय तक रहनेवालें बीमारियों का खतरा घटाता है। लाल रक्तकोशिकाओं को बढ़ाता है। एनीमिया में लाभदायी है। हाइड्रेशन और विटामिन-सी से निखार आता है। त्वचा में चमक लाता है। यह शरीर में क्षारीय प्रभाव डालता है। PH सन्तुलित करता है। शरीर से विषैले तत्व निकालता है, डिटॉक्स करता है। फ्लेवोनॉयड्स से भरपूर होता है। कैंसर से सुरक्षा में सहायक है। फाइबर की अच्छा मात्रा होने से पेट साफ रखता है, कोलेस्ट्राल घटाता है।

बैक्टीरिया और फंगस से लडता है। मुंह की सफाई में मददगार है। सांसों की बदबू और मसूडों के रोग दूर करता है। इसमें पेट भरनेवाला पेक्टिन होता है। वजन कम करने में मदद करता है। इसमें पोटैशियम और एंटीऑक्सीडेट्ंस होने के कारण ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करता है। यह कफ और बन्द नाक में सहायक है। सांस की समस्याओं में राहत देता है। झुर्रियों और दाग-धब्बों को कम करता है। इसका प्रयोग हेयर मास्क में किया जाता है। डैंड्रफ और बालों की तैलीयता घटाता है। इसको नेचुरल एयर फ्रेशनर जैसे प्रयोग किया जाता है। इसकी खुशबू से वातावरण ताजा होता है। आन्तों के कीडों को निकालने में सहायक है। (पत्तियाँ) तनाव कम करता हैं। चाय के रूप में शान्ति और नीन्द में मदद करता है। सर्दी-जुकाम में राहत देता है। (पत्तियाँ)

संतरे के अधिक सेवन से दुष्प्रभाव

संतरे में फाइबर और सिट्रिक एसिड अधिक होता है, जो ज्यादा मात्रा में लेने पर दस्त या पेट में ऐंठन कर सकता है। सन्तरे की प्रकृति अम्लीय होती है। अधिक सेवन से एसिड रिफ्लक्स और पेट में जलन हो सकती है। संतरे का रस दांतों के इनैमल को कमजोर कर सकता है, खासकर अगर ब्रश किए बिना या बहुत बार सेवन किया जाए। जिन लोगों की किडनी कमजोर होती है, उन्हें संतरें में मौजूद पोटैशियम को सम्भालना मुश्किल हो सकता है। कुछ लोगों को संतरे से एलर्जी हो सकती है - जैसे स्किन पर खुजली, सूजन या सांस लेने में दिक्कत हो सकता है। कुछ लोग सिट्रस् फलों में मौजूद Tyramine के कारण सिरदर्द का अनुभव कर सकते हैं। अधिक मात्रा में फाइबर शरीर के पाचन संतुलन को बिगाड सकता है, जिससे कब्ज या गैस की समस्या हो सकती है। लगातार अधिक सेवन कुछ दवाओं (जैसे ब्लड प्रेशर या एंटसिड) के साथ इंटरैक्सान कर सकता है।

दिन में 2 से 2 संतरे या एक गिलास ताजा संतरे का रस पर्याप्त होता है। यदि डायबिटीज, एसिडिटी या किडनी की समस्या से ग्रस्त हैं, तो सेवन से पहले डॉक्टर से सलाह लें। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, आचार्य भक्ति और देश भक्ति की महत्ता

- डॉ.टी.पद्मजाराणी

हमारे पवित्र ग्रंथों में यह बात साबित किया गया है कि ''मातृ देवोभव, पितृ देवोभव, आचार्य देवोभव, अतिथि देवोभव'' अर्थात हमारी जन्म देनेवाली स्त्री मूर्ति को मातृदेवता समझकर उस नारी की पूजा करना है। हर एक मनुष्य का यही कर्तव्य है कि अपनी जन्म देने वाली माता को भगवान समझकर इन की सेवा करना। अपने पिता को दैव मानकर उन की सेवा करना और अपने गुरु को प्रत्यक्ष भगवान मानकर उनकी सेवा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

पुराणों में यह बात साबित किया गया है कि माता, पिता और आचार्य की सेवा और शुश्रूशा करना हर एक मानव का प्रथम कर्तव्य है। प्राचीन काल में अनेक भारतीय इस बात को साबित किये है। उदाहरण के लिए रामायण में श्रवण कुमार नामक एक बालक अपने माँ और बाप को अपने भुजाओं पर माँ-बाप को बिठाकर उनका भार देते हुए उस ने जंगल में सफर करता था। उस समय अपने माता और पिता के प्यास को बुझाने के लिए उसने एक घडे को नदी में डुबा दिया। उस ध्वनि को दूर से सुनकर शिकार करते हुए आने वाले राजा दशरथ को यह ध्वनि कानों में पडा। इस ध्वनि को सुनकर राजा दशरथ ने समझा कि किसी जंगली जानवर नदी में पानी पी रहा है। ऐसा समझकर राजा दशरथ ने तीर छोडा उस ओर। यह तीर सीधे जाकर पानी घडे में भरने वाला श्रवण कुमार को चुभा। तुरंत वह बालक चिल्लाकर गिर पडा। बालक के स्वर को सुनकर भय भ्रांत होकर उस बालक के पास गया। अपनी माँ और बाप को प्यास बुझाने के लिए नदी से पानी लाकर उन को देने को राजा से कहकर मर गया।

राजा दशरथ अपनी मूर्खता पर पछताता हुआ श्रवण के माँ-बाप के पास आया और पानी पिला दिया। उन्हें यह बात कहा। इस श्रवण कुमार की मरण वार्ता सुनकर वे अत्यंत दुखित हुए। उन्होंने दशरथ को शाप दिये। राजा दशरथ को भी उस की बुढापे में पुत्र वियोग से दुखित होने का शाप उन्होंने दिया। इस श्रवण कुमार की कथा से हमे मालुम होता है कि हम सब भी अपने माँ-बाप दैव समान मानकर सेवा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

इस कथा को सुनकर हमारे जाति पिता बापूजी ने भी प्रभावित होकर अपने हृदय में सिर्फ अपने माँ-बाप के नहीं देश की सेवा करने का बीडा उठाया। उन्होंने लंडन में बारिस्टर पढने के लिए लंडन जाते समय उन की माँ के समक्षा में हमेशा सच बोलने, मांस और मद्य पान नही करने और पराय स्त्रीयों को अपनी माँ समझकर रहने के प्रमाण की। और उन्होंने उन प्रमाणों को लंडन में संपूर्ण भक्ति भाव से निभाया। उन्होंने अपने बचपन में श्री हरिश्चंद्रोपाख्यान कथा सुनकर बहुत प्रभावित हुए। निष्कर्षतः यह कहा जाता है प्रत्येक मनुष्य को अपने बडों का आदर सम्मान करना चाहिए।

जुलाई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

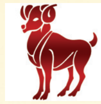

मेष राशि - मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल पंचम भाव में होने से अनिश्चितता के बावजूद कार्य में सफलता, सामाजिक विकास, दैनन्दिन जीवन की नियमितता से स्वास्थ्य उत्तम, आर्थिक सफलता, राजकीय सम्मान सहयोग की प्राप्ति, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, व्यापार में उत्कर्ष। मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

वृषभ राशि - इस मास शुक्र स्वराशिगत में होने के कारण रूके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम, उल्लास वृद्धि, सामाजिक विकास, आर्थिक उत्कर्ष, उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन शुभ प्रभावी, रचनात्मक कामों में सफलता, आर्थिक प्रगति, उलझनों में कमी, समस्याओं का समाधान, मांगलिक कार्यों में व्यय, यात्रा सम्भव।

मिथुन राशि - गुरु इस राशि पर होने के कारण मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। सकारात्मक परिवर्तन होंगे, राजकीय-सम्मान-सहायता प्राप्ति की सम्भावना, नये लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। दैनन्दिन जीवन में नियमितता, शुभ विचारों का उदय, उद्योग-व्यापार में सफलता, शत्रु विजय, ज्ञान वृद्धि।

कर्कटक राशि - पुराणे रूके हुए कार्यों में प्रगति होगी, नवीन कार्य पर खर्च की योजना भी बनेगी। अव्यवस्थित दिनचर्या, उदर-वायु विकार, रोगप्रतिरोधक क्षमता में कमी, वाणी व्यवहार की कटुता से कार्यावरोध, आर्थिक तंगी, उद्योग-धन्धे में उदासीनता, उत्तरार्ध में सूर्य का परिवर्तन थोड़ी राहत देगा।

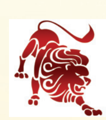

सिंह राशि - मासारम्भ में खर्च अधिक होंगे, कार्य व्यस्तताएँ भी रहेगी। कांतिक्षय, विवाद ग्रस्तता, कार्यों में सीमित सफलता, कौटुम्बिकदायित्व निर्वहन कठिनाई, वायुविकार, ज्वरादि से कष्ट, धार्मिक प्रवृत्ति, व्यापार में प्रगति, उत्तरार्ध में गोचरीय परिवर्तन मानसिक-शारीरिक कष्ट बढ़ायेगा।

कन्या राशि - बुध लाभ स्थान में होने से नौकरी-व्यवसाय की स्थिति अनुकूल, आरोग्य सुख, कार्यों में सफलता, गृह-भूमि, वाहन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान, शैक्षणिक रुचि, एकाधिक स्त्रोतों से लाभ। उत्तरार्ध में उच्चाधिकारियों का सहयोग-समर्थन, व्यापारिक सफलता, ज्ञान वृद्धि, कौटुम्बिकदायित्व में वृद्धि, यात्रा लाभ।

तुला राशि - मासारम्भ से शुक्र अष्टमस्थ रहने से व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य सामान्य, कार्य क्षेत्र की विघ्नबाधाओं का निवारण, आर्थिक लेन-देन में सावधानी, पारिवारिक सुख-शान्ति हेतु सार्थक प्रयास, रोजी रोजगार में अनुकूलता। उत्तरार्ध में सकारात्मक बदलाव दिखेगा।

वृश्चिक राशि - मंगल की दृष्टि होने के कारण धन लाभ एवं बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। नौकरी क्षेत्रों में पदोन्नति व भाग्य में कुछ परिवर्तन के योग हैं। पराक्रम, धैर्य, विवेकशीलता की वृद्धि, रचनात्मक प्रवृत्ति, आरोग्य सुख, व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु शारीरिक कष्ट रहेगा।

धनुष राशि - आपके राशि पर गुरु एवं शनि की दृष्टियाँ होने से शुभाशुभ (मिश्रित) प्रभाव होंगे। मास के पूर्वार्द्ध में धन लाभ व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। श्रमाधिक्य, स्वास्थ्य सामान्य, सामाजिक विकास, पठन-पाठन में रुचि आर्थिक संतुलन बना रहेगा। नौकरी व्यापार में सामान्य स्थिति।

मकर राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। सूर्य की दृष्टि रहने से बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। सरकारी क्षेत्रों में रुकावटें पैदा होने की सम्भावनाएँ होंगी, अन्न-धन वस्त्रादि की प्राप्ति, शक्ति संवर्धन, मान-सम्मान के साथ जीवन यापन। विशिष्टजनों का सहयोग-सद्भाव प्राप्त होंगे जिससे कार्यों में प्रगति, आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक होंगे। अनेक स्त्रोतों के द्वारा आय में वृद्धि होगी।

कुंभ राशि - अपने सहयोगियों के ऊपर विश्वास न करे, अपनी मन की बात उनके पास न रखें सावधान पूर्वक विचार को उपस्थित करे जिससे वह आपका गुप्त विचारों को न जाने क्योंकि वह आपके साथ कपटपूर्ण व्यवहार करेगा। विवेक शीलता के बाद भी व्यवहारिक कुशलता परिलक्षित होनी चाहिये। तभी अभिष्ट सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा।

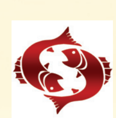

मीन राशि - गुरु की स्थिति के कारण धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। सुन्दर-सुखद वातावरण, आरोग्य सुख, आर्थिक स्थिति में मजबूती, उद्योग-व्यापार में सफलता, पठन-पाठन में अभिरुचि, संवाद से हर्ष, वाहनादि सुख। नए-नए लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। कोई बिगड़ा काम बनेगा, कार्य में व्यस्तता होने के कारण दौड़-धूप अधिक रहेगी।

(नीतिकथा)

साधु का आशीर्वाद

- श्री के.रामनाथन

सीतापुर एक छोटा गाँव था। वहाँ माधव और श्याम नामक दो लोग रहते थे। वे दोनों घने मित्र थे। वे दोनों गाँव में जो काम मिलता था उसे करके अपना जीवन बिता रहे थे। गरीब होने पर भी उनमें भगवान के प्रति बड़ी भक्ति और श्रद्धा थी। हर दिन वे अपना काम प्रारंभ करने के पहले भगवान का नाम स्मरण करके करते थे। उनके उत्तम गुणों के कारण गाँव के लोग उन पर अधिक स्नेह रखते थे और उनको उचित सहायता भी करते थे। रामपुर पड़ोस गाँव था। एक बार वहाँ एक महान साधु आ ठहरे थे। साधु अपने उपदेश से लोगों को अच्छी सलाह देते थे।

यह खबर सीतापुर में आ पहुँची। माधव और श्याम उस महान साधु के दर्शन करना चाहते थे। लेकिन उनसे तुरंत निकलना असंभ रहा था। क्योंकि वह फसल की कटाई का समय था। गाँव के किसान उनकी सहायता लेते थे। आखिर फसल की कटाई का काम पूरा होने के बाद उन दोनों मित्रों ने रामपुर जाकर साधु के दर्शन करने का निश्चय किया था। वह गाँव सीतापुर से बहुत दूर बसा हुआ था। वहाँ तक जाकर लौटने के लिए तीन दिन का समय लगेगा। इसलिए उन दोनों मित्रों ने रास्ते में खाने के लिए आवश्यक रोटियाँ बनाकर अपने साथ ले चले थे।

उस लंबी यात्रा के बीच एक घना जंगल भी था। उसे पार करने पर ही रामपुर पहुँच सकते हैं। वे दोनों पैदल निकल पड़े। रास्ते में विश्राम करते हुए वे धीरे-धीरे चलने लगे। ऐसे ही वे दोनों घना जंगल पार कर रहे थे। दुर्भाग्यवश तेज हवा के साथ वर्षा होने लगी। वे दोनों वर्षा से बचने के लिए कोई स्थान ढूँढ रहे थे। उन्होंने थोड़ी ही दूर पर पुराने और उजड़े एक भवन को देखा। वे जल्दी-जल्दी वहाँ जा पहुँचे। वह भवन इतना पुराना और उजड़ा हुआ था कि दीवारों में दरारें पड़ी हुई थी और वह किसी भी हालत में टूटकर गिरने की दशा में थी। फिर भी वे दोनों वर्षा के रूकने तक वहीं ठहरे हुए थे। तब यकायक उस भवन का एक खंभ टूटकर नीचे गिर गया। ईश्वर की कृपा से वह उन दोनों पर नहीं गिरा था। इसलिए वे जान-जान बच गये थे।

लेकिन बड़ा आश्चर्य यह था कि जब वह खंभ टूटकर गिरा तब उसमें से हजारों की संख्या में सोने के सिक्के भी गिरे थे। यह देखकर दोनों मित्र अवाक रह गये। तब श्याम ने कहा, ''मित्र हम इन सोने के सिक्कों को एक थैली में भरकर बाँध देंगे और साधु से आशीर्वाद लेकर लौटते समय उस थैली को ले लेंगे। गाँव जाकर उनको समान बाँट लेंगे।'' माधव ने भी उसे मान लिया। श्याम कहीं से एक बड़ी थैली ले आयी। उन दोनों ने वहाँ के सारे सिक्कों को थैली में भरकर उसको पास के एक कमरे में छिपाकर रख दिया।

इतने में वर्षा भी रुक गयी और वे दोनों रामपुर आ पहुँचे। वे वहाँ के एक बड़े मंदिर में ठहरे साधु से मिलने गये। साधु ने उन दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहा, ''जो मिलना चाहिए वह जरूर मिलेगा''। साधु के ऐसे आशीर्वाद से वे दोनों मित्र खुश हुए। इतने में रात हो गयी और लौटना भी मुश्किल था। क्योंकि रात के समय जंगल पार करना खतरनाक था। इसलिए दोनों मित्रों ने उस मंदिर के निकट स्थित एक धर्मशाला में ठहर गये।

माधव और श्याम दोनों साथ-साथ सो रहे थे। श्याम का मन सदा उस सोने के सिक्कों के बारे में ही सोच रहा था। वह उन सारे सिक्कों को खुद हड़प लेने चाहता था।

माधव को धोखा देने के लिए उसने एक उपाय बनाया। वह माधव के सोने के बाद उस भवन की ओर निकल पड़ा जहाँ सिक्कों की थैली छिपाकर रखी गयी थी। वहाँ पहुँचकर उसने थैली के सारे सिक्कों को दूसरी थैली में भर दिया और पुरानी थैली को पत्थरों से भरकर रख दिया। सिक्कों से भरी थैली को वह कहीं छिपाकर रख दिया। उसके बाद वह धर्मशाला में लौटकर सो गया।

अगले दिन दोनों मित्र अपने गाँव की ओर निकल पड़े। वे उस उजड़े भवन में आ पहुँचे जहाँ पिछले दिन थैली छिपाकर रखी गयी थी। माधव ने उस थैली को देखा और उसने श्याम से कहा, ''यह थैली कल से भी भारी लगती है। इसलिए खोलकर देखेंगे।'' उसके बाद थैली खोली गयी और वहाँ स्वर्ण के सिक्के नहीं थे बल्कि पत्थर के टुकड़े मात्र थे। यह देखकर माधव को बड़ा धक्का लगा और श्याम ने उदास होने का बहाना किया। उसने कहा कि यह कोई पिशाच का काम होगा। उसके बाद श्याम ने माधव को देखकर कहा, ''मित्र, इसमें चिंता करने की क्या जरूरत है। क्योंकि वे सोने के सिक्के हमारे परिश्रम से मिले नहीं थे। इसलिए हमारा कोई नुकसान नहीं है।''

श्याम की बातें सुनकर माधव ने भी समझा कि हाँ, सच है। वे हमारे परिश्रम से मिले नहीं थे। साधु ने भी हमें ऐसा आशीर्वाद दिया है कि जो मिलना चाहिए, वह जरूर मिलेगा। इसलिए हम चिंता छोड़कर गाँव चलेंगे। उसके बाद वे दोनों अपने गाँव वापस आ पहुँचे। एक-दो दिन बाद श्याम अकेले उस उजड़े भवन में जाकर छिपाकर रखी गयी स्वर्ण के सिक्कों की उस थैली को लेकर अपने यहाँ आ गया। वह उस धन के सहारे एक बड़े घर का निर्माण कर दिया और डाट-बाट का जीवन बिताने लगा। यह देखकर माधव को उस पर संदेह पैदा हुआ। शायद उसने स्वर्ण की थैली लेकर उसे धोखा दे दिया हो।

इतने में एक दिन श्याम अपने दोनों बच्चों के साथ माधव से मिलने आया। उसने माधव से कहा, ''मित्र, मैं और मेरी पत्नी दोनों तीर्थयात्रा के लिए निकल रहे हैं। वापस लौटने को तीन महीने का समय लगेगा। मुझे तुमसे एक मदद चाहिए। मेरे लौटने तक इन दोनों बच्चों की देखरेख करना।'' श्याम की बात सुनकर माधव ने कहा, ''मित्र, तुम निश्चित तीर्थयात्रा के लिए निकलो। तुम्हारे लौटने तक मैं उनका देखभाल करता हूँ।'' उसके बाद श्याम तीर्थ यात्रा के लिए निकल गया और उसके दोनों बच्चे माधव के घर में ही ठहर गये।

तीन महीने के बाद अपनी तीर्थयात्रा पूरी करके श्याम माधव के यहाँ आया और अपने बच्चों को साथ ले आने की बात कही। तब माधव ने खुशी से कहा, ''मित्र, तुम अपने बच्चों को ले चलो'', ऐसा कहते हुए एक पिंजड़े को उसके हाथ में दिया और उसमें दो चिड़ियाँ थीं। यह देखकर श्याम को बड़ा धक्का लगा। उसने पूछा, ''अरे मित्र, यह क्या खेल है? मैं अपने बच्चों को वापस देने के लिए पूछ रहा हूँ। तुम तो पिंजड़े में बंद दो चिड़ियों को दे रहे हो।'' यह सुनकर माधव ने कहा, ''मित्र, यह कोई पिशाच का काम है। उसने एक दिन रात तुम्हारे बच्चों को इस प्रकार चिड़ियों में बदल दिया। मैंने उनको सुरक्षित इस पिंजड़े में बंद रखा है।'' माधव की ऐसी बात से श्याम समझ गया कि उसने मित्र के साथ जो धोखे का काम किया था उसका फल है। उसने अपने मित्र से अपनी गलती के लिए क्षमा याचना की और कहा, ''मैं तुम्हारे हिस्से के सिक्के वापस कर देता हूँ, तुम मेरे बच्चों को वापस कर दो।''

माधव ने उसकी बात मानकर उसके दोनों बच्चों को सही सलामत उसके पास सौंप दिया और श्याम ने भी वादा के अनुसार स्वर्ण के सिक्कों में आधा हिस्सा मित्र को दे दिया। हाँ सच है, जो मिलना चाहिए वह जरूर मिले बिना नहीं रहेगा। साधु का ऐसा आशीर्वाद सच निकला और दोनों मित्र आनंद से अपना जीवन बिताने लगे।

चित्रकथा

भीम पर विष का प्रयोग

तेलुगु मूल - श्रीमती वाविलाल नागवल्लि

अनुवादक - डॉ.एम.रजनी

चित्रकार - डॉ.के.श्रीधरन्

हस्तिनापुर में पांडव और कौरव अस्त्रविद्या और तरह-तरह के खेल के साथ समय गुजार रहे थे। उन में भीम अपने खेलकूद से कौरवों को हमेशा तंग करते हुए उनकी बेइज़्ज़त करता था। भीम की आक्रमता को सह न करने के कारण दुर्योधन के भाई दुर्योधन के पास जाकर भीम के बार में शिकायती की। उसके बाद की कहानी निम्नांकित है।

वन भोजन में सभी आनंद ले रहे थे। तब दुर्योधन...
रे! भीम इधर आवो! इस लड्डू को खाओ। यह लो...
ऐसा है दुर्योधन हाँ बहुत अच्छा है यह लड्डू बहुत स्वादिष्ट है।
इस प्रकार विष से मिला लड्डू खाकर वह भीम बेहोश हो गया। अरे भाई! सब लोग इधर आओ उस भीम को रस्सी से बाँध कर जल में फेंक दो।
वाह! शाबाश बिलकुल वैसा ही। इस प्रकार भीम को जल में फेंक दिये।
इस प्रकार नदी में गिरा भीम सीधा नाग लोक पहुँचा। उसे देख कर वासुकी... वह लडका कौन है आर्यक?
हे प्रभु! वह बच्चा मेरा पोता है शूरसेन की पुत्री कुंती का पुत्र भीम है।
बेटा! भीमसेन! इधर आओ! इस रस को पीओ।
हाँ... बहुत अच्छा है। नानाजी इस आठ मटकों का रस को मैं ने पी लिया। अब मुझे नींद आ रही है। अब मैं जाकर सो जाऊँगा।
अगले दिन नींद से भीम उठा। बेटा भीमसेना! माँ तुम्हारी राह देखती होगी अब घर चलो। बलसंपन्न बनकर रहो।
ठीक है। नानाजी धन्यवाद! अब मैं चलूँगा।
कुंतीदेवी अपना लडका न दिखने से रोने लगी। माँ! मैं आ गया हूँ कहकर सारी कहानी अपनी माँ को सुनाता है।
सच में। ऐसा हुआ है क्या! जैसे भी हो तुम आगये हो। वही मेरे लिए बहुत है। श्रीकृष्ण भगवान को मेरा प्रणाम है।
K.Sreedharaiah
इस प्रकार बचपन में शुरू हुई छोटी मोटी झगडे ही महाभारत संग्राम के लिए नींव बन गया।
जो बचपन में नहीं सुधरा, वो बड़ा होकर क्या सुधरेगा। बचपन से ईर्ष्या द्वेष रखेंगे तो वे अपने साथ ही बढते जायेंगे। इसलिए उसे बचपन में ही तोड देने से जीवन में सुख शांति पायेंगे।
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-36

1) वेदवती ने किस से विवाह होने के लिए तपः किया था?
ज)..
2) श्री व्यासतीर्थ स्वामी ने कौनसा उम्र में ब्रह्मोपदेश को प्राप्त कर लिया?
ज)..
3) हम्पी में प्रसिद्ध हनुमान मंदिर का नाम क्या है?
ज)..
4) आडि कृत्तिका के अवसर पर किस भगवानजी को पूजा करते हैं?
ज)..
5) सुब्रह्मण्य स्वामी का माता-पिता कौन है?
ज)..
6) सुब्रह्मण्य स्वामी का बडे भाई का नाम क्या है?
ज)..
7) तिरुकाट्टूकरै क्षेत्र का तीर्थ का नाम क्या है?
ज)..
8) तिरुमूळिक्कलम् क्षेत्र में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
9) तिरुवल्लवाल क्षेत्र का विमान गोपुर का नाम क्या हैं?
ज)..
10) गरुड़ा के माताजी का नाम क्या है?
ज)..
11) विष्णु भगवान का वाहन क्या है?
ज)..
12) तमिल कालमान के अनुसार आणि मास में संपन्न करनेवाले उत्सव का नाम क्या है?
ज)..
13) भीम का बडा भाई का नाम क्या है?
ज)..
14) कौरव और पांडवों के गुरु कौन है?
ज)..
15) देवताओं के गुरु कौन है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

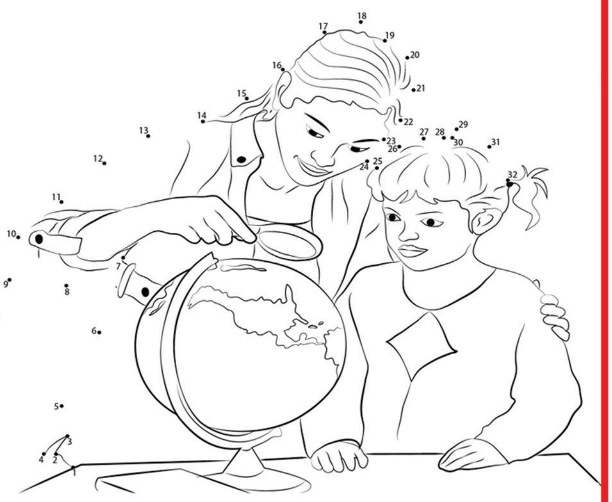

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) ऋषि-मुनि	अ) राखी
2) वधु-वर	आ) यज्ञ
3) बाई-बहन	इ) विवाह
4) पूर्णिमा-अमावास्या	ई) नवग्रह
5) राहु-केतु	उ) तिथियाँ

1) आ 2) इ 3) अ 4) उ 5) ई

श्रीशिव स्तुति

श्रुति स्मृति पुराणनां
आलयं करुणालयं।
नमामि भगवत्पादं
शंकरं लोकशंकरं।।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

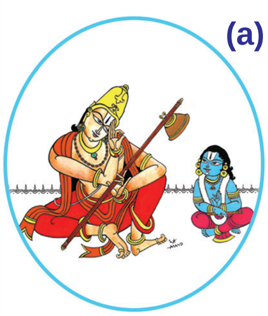

(b)

(c)

(d)

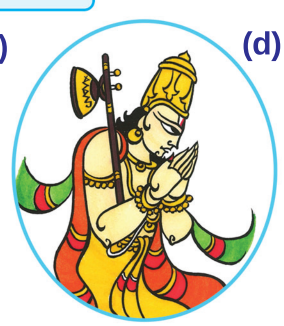

(e)

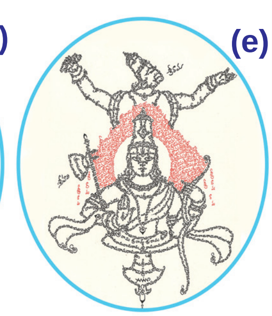

(1) **सख्यं** (2) **प्रार्थना (अर्चनम्)** (3) **गीत गान गाना (कीर्तनम्)** (4) **सुनना (श्रवणम्)** (5) **वंदनम् (दास्यम्)**

जवाब : a) 4, b) 3, c) 2, d) 5, e) 1.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

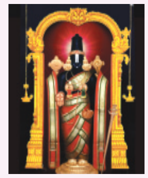

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
ई.एम.ओ. (EMO) :
दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पड़ेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष : 2264359,
2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

05-06-2025 को तेलंगाना, हैदराबाद में स्थित हिमायतनगर में विराजित ति.ति.दे. का श्री बालाजी के मंदिर में वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर अत्यंत वैभव से गरुड़वाहन सेवा को संपन्न किया। इस वाहन सेवा में धर्मपत्नि सहित ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी ने भाग लिया।

28-05-2025 को तिरुपति में स्थित स्विम्स आस्पताल में निर्माण में हुई भवनों को निरीक्षण करते हुए ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का जे.ई.ओ श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और स्विम्स निदेशक प्रो.आर.वी.कुमार और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

05-06-2025 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर तिरुमल में हरित वन अभिवृद्धि के लिए गोगर्भ बांध के नजदीक में हुए आक्टोपस भवन के आंगण में पौधे लगाए गए। इस संदर्भ में ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्याचौदरी, आई.आर.एस., और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

23-05-2025 को तिरुमल बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन सदस्य के रूप में श्री सी.दिवाकर रेड्डी जी (तुडा अध्यक्ष) ने शपथ ग्रहण किया। तदनंतर इन्हीं जी को ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. जी ने तीर्थ-प्रसाद को सौंपा दिया।

05-06-2025 को तिरुमल बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी के रूप में श्री के.वी.मुरलीकृष्णा, आई.पी.एस., ने शपथ ग्रहण किया। इस संदर्भ में नूतन अधिकारीजी को मंदिर के अधिकारीगण ने तीर्थ-प्रसाद को सौंपा दिया।

31-05-2025 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका कार्यालय में प्रधान संपादक (एफ.ए.सी.) के पद में नियुक्त हुई डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम् जी।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-06-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.
श्री आंडाल माँ का
तिरुवाडिप्पूरम्
28-07-2025